जीवन रहस्य

Secret of Life

आचार्य विशुद्धसागर मुनि

जीवन रहस्य

Secret of Life

(विद्यार्थियों के उत्कर्ष के लिए प्रेरणाप्रद कृति)

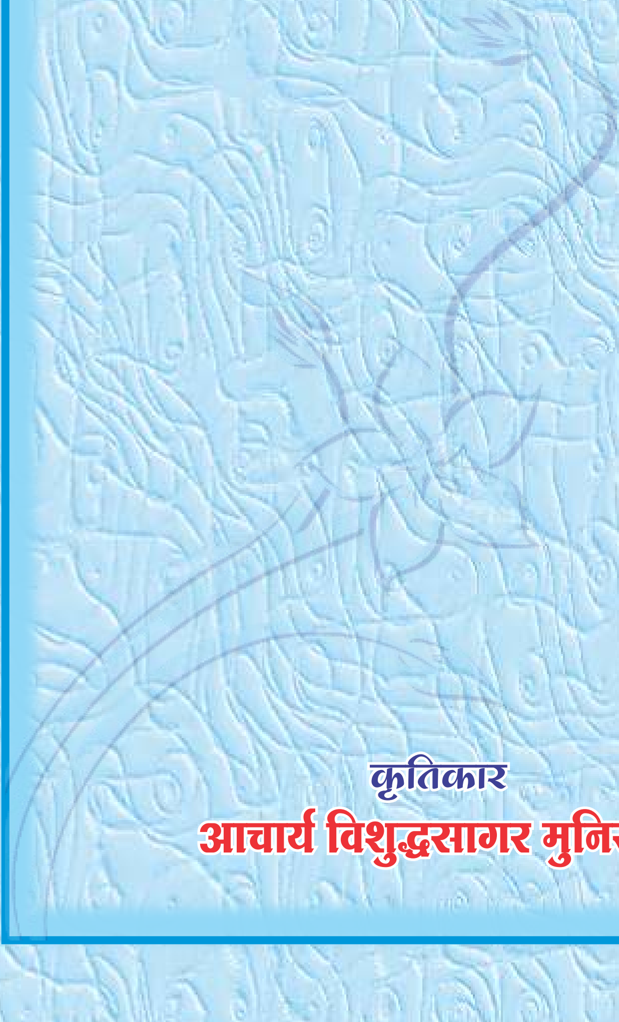

कृतिकार

आचार्य विशुद्धसागर मुनिराज

प्रस्तुत कृति : **जीवन रहस्य**
(गोंदिया, वैशालीनगर, रायपुर, भोपाल एवं अन्य स्थानों पर विद्यार्थियों को दिये गए संबोधन का संक्षिप्त संग्रह)

कृतिकार : **आचार्य विशुद्धसागर मुनि**

संकलन : **श्रमण सुव्रतसागर मुनि**

संपादक : **नितिन नांदगांवकर**

संस्करण : प्रथम, 2017/3300 प्रतियाँ
द्वितीय, 2018/5000 प्रतियाँ

प्राप्तिस्थान :
- जीवराज जैन ग्रंथमाला, सोलापुर (महाराष्ट्र)
  फोन : 0217-2321008
- श्रावक संस्कार साहित्य केन्द्र
  श्री नन्दीश्वर दीप जिनालय
  जैन नगर, लालघाटी, भोपाल (म.प्र.)
  फोन : 9425374897, 8878932223
- श्रमण संस्कृति सेवा संघ, इंदौर (म.प्र.)
  फोन : 9425321151, 9826210189

मुद्रक : विकास ऑफसेट प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा,
भोपाल फोन : 9425005624

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ क्रमांक
कृति एवं कृतिकार	01
संपादकीय	02
सत्संगति	05
प्रार्थना	05
भावना	06
सरस्वती मंत्र	06
संगति	07
संगति का प्रभाव	07
कुसंसर्ग: सदा त्याज्यो	08
कुसंगति: अग्नि के समान	08
घातक शस्त्र: शंका	09
सुरक्षा करें: शंका से	10
सहन करो: सम्मान मिलेगा	11
मिट्टी को मिला सम्मान	11
डरोगे तो मरोगे	12
भय का भूत: मत करो भूल	13
आलस बुरी आदत	15
अच्छी आदतें	16
शाकाहार: उच्च विचार	16
उत्साह उन्नति का आधार	17
विद्वेषी: महाविरोधी	20
ईर्षालु की ईर्षा	20
बुरा करोगे तो बुरा होगा	22
उपकार कभी मत भूलो	24
आत्मानुशासक बनो	26
संस्कार: सुख की राह	27
संकल्प	30
संस्कार की महिमा	31
झुकेगा वही आकाश में दिखेगा	32

पिता की पवित्र दृष्टि 34
अनर्थ की जड़: श्री, स्त्री 35
आत्म-संतोषी बनो 37
वाणी वीणा बने, बाण नहीं 38
शिक्षा का सुफल 39
स्वात्मावलोकन आवश्यक 40
जीवन: अमूल्य धरोहर 41
शिक्षक दें: दिशा-बोध 42
समय की समझदारी 42
श्रम से श्रेष्ठता 43
शब्द सुमन 44
चिंता न करें 45
अच्छी आदतें 47
कहाँ जायें? 47
कहाँ न जायें? 48
स्वयं को बचायें 48
स्वयं को लगायें 49
क्या बनें? 49
कभी न छोड़ें 49
चिन्तामुक्ति के उपाय 50
अवनति के कारण 50
उत्कर्ष के सूत्र 51
कैसे रहें प्रसन्न? 52
अहिंसा 53
सत्य 54
अचौर्य 55
ब्रह्मचर्य 56
अपरिग्रह 56
श्रेष्ठ सीख 57
जीवन जीने के गुर 58

कृति-कृतिकार

अध्यात्मयोगी, दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर जी अध्यात्म रस-रसिक, प्रभावी-प्रवचनकार, गहन चिंतक लेखक एवं मन भावन व्यक्तित्त्व-कृतित्व के धनी हैं। आपकी शतकों आध्यात्मिक कृतियाँ पाठकों को समादरनीय संस्तुत्य हैं। इन्हीं शतकों साहित्यिक कृतियों में प्रस्तुत कृति "**जीवन रहस्य**" है। जो उगते योवन के युवाओं को अवश्य ही पठनीय है।

"जीवन रहस्य" कृति में कुसंस्कारों के दुष्परिणाम, संस्कारों की महत्त्वता, सकारात्मक सोच एवं उत्साह-शक्ति से सर्वोत्थान की उत्कर्ष-प्रेरणा दी गई है। लघु-कथाओं से विवेच्य विषय को संपुष्ट कर मनोहारी एवं बोधगम्य बनाया गया है। अवश्य ही "**जीवन रहस्य**" कृति पाठकों को सम्यक्-विकास की सु-राह प्रशस्त करेगी।

अनन्य उपकारी, आचार्य रत्न श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने हम सब पर महत्-उपकार किया है, जो युवाओं को यह सम्यक् उपदेश दिया है। यह कृति निश्चित ही जीवन विकास की राह में सहयोगी बनेगी। संस्कारों की ओर प्रेरित करती यह कृति पाठकों को पारायण हेतु प्रस्तुत है।

पूज्य आचार्य भगवन् विशुद्धसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद से मैं प्रस्तुत कृति "**जीवन रहस्य**" के संकलन कार्य में संलग्न हुआ, श्रुत सेवा के इस महत् उपकार के लिए मैं पूज्य श्री गुरुदेव के प्रति अत्यंत विनयशील हूँ।

'शुभम् भूयात्'
सर्वेषां मंगलम् भवतु।

गुरुचरणाम्बुज-चंचरीक
श्रमण सुव्रतसागर मुनि

सम्पादकीय

भारत भूमि पर भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिये समाज एवं राष्ट्र को संतों की जरूरत है। वर्तमान युग में जैनाचार्य और संत, मुनियों को चलते-फिरते तीर्थ माना गया है। इनकी अद्भुत साधना से सम्पूर्ण विश्व को सुख, समृद्धि एवं संस्कार की प्राप्ति हो रही है। इसी श्रृंखला में समाज व देश के प्रति सदैव चिंतनशील रहने वाले दिगम्बराचार्य विशुद्धसागर जी महाराज हैं। आचार्य श्री द्वारा प्रस्तुत ''जीवन रहस्य'' विद्यार्थियों के लिये एक अत्यंत प्रेरणादायी एवं शिक्षास्पद कृति है।

वर्तमान युग में जब हम पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति का तेजी से अंधानुकरण कर रहे हैं, टेलीविजन, समाचार पत्र एवं इंटरनेट आदि माध्यम से हमारे बच्चों पर पाश्चात्य संस्कृति एवं अश्लीलता आरोपित की जा रही है। ऐसे कलयुग में इस सांस्कृतिक आक्रमण का सामना मात्र हमारे बच्चों में नैतिकता एवं सुसंस्कार रूपी बीज डालकर ही किया जा सकता है। आज जैन समाज में बच्चों को उच्च शिक्षा दी जा रही है। इस हेतु उन्हें गृह नगर से बाहर तथा अनेक बार विदेशों में भी रहना होता है। बाहर जाने के पश्चात कई बच्चे कुसंगती में पड़कर धूम्रपान, मद्य सेवन एवं नशाखोरी जैसी जानलेवा आदतों के शिकार हो जाते हैं। सामान्यतः ऐसी आदतों के शिकार वे बच्चे होते हैं जिन्हें बचपन से धार्मिक संस्कार एवं नैतिक शिक्षा नहीं दी गई है।

परिणाम यह है कि हमारे युवा असमय विभिन्न रोगों से या तो ग्रस्त हो रहे हैं अथवा नैतिक पतन के परिणामस्वरूप विद्या अध्ययन से विमुक्त हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त युवा वर्ग में प्रेम-विवाह, विवाह पूर्व संबंध, नशाखोरी आदि अनेक कुसंस्कार पल्लवित हो रहे हैं, जिससे वे धर्म एवं अध्यात्म से दूर होकर अपने जीवन को अंधकारमय बना रहे हैं।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी द्वारा रचित ''जीवन रहस्य'' कृति छात्रों में संस्कारों का आरोपण करने, गुणीजनों के आचरण से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनाने का मंत्र देती है।

प्रस्तुत कृति में संगति नामक अध्याय में इस पर एक अत्यंत सुन्दर उदाहरण देकर सत्संगति के परिणामों का वर्णन किया है।

आचार्य श्री लिखते हैं-

‘‘सीप के सत्संग से पानी की बूँद मोती बन जाती है, पारसमणि के सत्संग से लोहा स्वर्ण बन जाता है। समुद्र के सत्संग से नदी समुद्र बन जाती है। सत्संगति वह महाशक्ति है जिसके प्रभाव से जीवन के किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।’’

आचार्य श्री का स्पष्ट संदेश है कि यदि जीवन में कुछ प्राप्त करना है तो सत्संगति अत्यंत आवश्यक है। अतएव कुसंगति में पड़कर युवा वर्ग अपना जीवन व्यर्थ न करें। आचार्य श्री आगे कहते हैं कि जिस प्रकार से एक मिट्टी को कलश में परिवर्तित होने के लिये कई आपदाओं से गुजरना पड़ता है। पहले कुंभकार उसे जमीन से खोदकर निकालता है फिर द्वार पर पटककर पानी में गलाकर पैरों से रौंधता है, पीटता है, फिर लौंदा बनाकर चाक पर रखकर कलश का आकार देता है। लेकिन यह कलश तभी पूर्ण रूप प्राप्त करता है जब उसे अग्नि में तपाया जाता है। तात्पर्य यह है कि जीवन में कुछ बनने के लिये सहनशीलता एवं कुछ खोना आवश्यक है। यदि युवा वर्ग जीवन में सर्वोच्च आयाम को हासिल करना चाहते हैं तो उन्हें संस्कारों की बारहखड़ी सीखकर, लक्ष्य प्राप्त करने के लिये कठोर परिश्रम करना होगा। इसके लिये जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये जुनून के साथ लगन, समर्पण एवं सही दिशा में प्रयास जरूरी है।

आचार्य श्री आव्हान करते हैं कि यदि जीवन में कुछ पाना है तो संस्कारों की अग्नि में तपना होगा तभी आप कुंदन अथवा स्वर्ण बन सकोगे। युवा वर्ग यदि जीवन में ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते हुये अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तो उनका जीवन सच्चा तीर्थ बन सकता है।

आचार्य श्री द्वारा रचित कृति। ‘‘जीवन रहस्य’’ इन्हीं अनछुए पहलुओं से युवावर्ग का परिचय कराते हुये उन्हें अपने जीवन की नाव को पार कराने की शिक्षा देती है। छोटे-छोटे उदाहरण देकर इस कृति के माध्यम से किस प्रकार संस्कार

आरोपित कर युवावर्ग के जीवन को मंगलमय बनाया जा सकता है, यही इस कृति का सार है।

कहते भी है कि-

> “बीज बो दो फूल खिलकर जीवन को बहार कर देंगे
> और शिक्षा एवं सुसंस्कार दे दो तो
> नौजवान मिलकर देश को सवार देंगे।”

संदेश यही है कि यदि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी के द्वारा इस कृति में दिये गये सूत्रों को युवा शक्ति अपने जीवन में उतारे तो निश्चित ही उनके जीवन का मंगलाचरण प्रारंभ हो जायेगा। ऐसी अद्भुत कृति युवाओं एवं समाज को देने के लिये हम सब आचार्य श्री के लिये अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। हम सब इसे पढ़े, फिर कुछ गुनें एवं अपने जीवन में कुछ अच्छा बुनें, यही मंगल भावना।

नितिन नांदगांवकर
अपर संचालक, वित्त एवं विशेष सहायक,
मंत्री, वित्त एवं वाणिज्यिक कर, मध्यप्रदेश शासन
पताः ई-2/272 अरेरा कालोनी, भोपाल
मो. 09425010124

सत्संगति

सत्सङ्गो हि बुधैः कार्यः सर्वकाल सुखप्रदः।
तेनैव गुरुतां याति गुणहीनोऽपि मानवः॥

बुद्धिमानों को सदा सुखदायी सत्संगति ही करना योग्य है, धर्मात्मा, सज्जन, सदाचारी एवं ज्ञानी मानवों की संगति सदा सुख देनेवाली होती है। ऐसी संगति में बैठने से गुणहीन के अवगुण दूर चले जाते हैं और गुणों की प्राप्ति हो जाती है।

(श्रीमद् कुलभद्राचार्यकृतः सारसमुच्चय)

प्रार्थना

प्रेम भाव हो सब जीवों से, गुणीजनों में हर्ष प्रभो।
करुणा स्रोत बहे दुखियों पर, दुर्जन में माध्यस्थ विभो॥

हे प्रभु! जगत् के सम्पूर्ण जीवों पर अर्थात् मनुष्य हो या पशु, मित्र हो या पड़ौसी, परिजन हो या पराया सभी पर मेरा प्रेम भाव रहे तथा जो ज्येष्ठ-श्रेष्ठ हैं गुणीजन हैं उनके प्रति प्रमोद, आह्लाद, हर्ष भाव रहे अर्थात् गुणीजनों को देखकर खुशी हो, आनंद हो और जो दुःखी प्राणी हैं उनके प्रति करुणा भाव बना रहे एवं जो दुर्बुद्धि हैं, विपरीत प्रवित्ति करने वाले हैं ऐसे दुर्जनों के प्रति भी मेरा माध्यस्थ भाव सदा बना रहे।

(सामायिक पाठ)

भावना

मैत्री भाव जगत् में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे।
दुर्जन-क्रूर कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य भाव रक्खूँ मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे॥

गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे॥

सरस्वती मंत्र

ऊं ह्रीं अर्हन् - मुख - कमल निवासिनी पाप मल क्षयंकरि श्रुत ज्वाला सहस्त्र प्रज्वलिते सरस्वती तव भक्ति प्रसादात् मम पाप विनाशनं भवतु क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवर धवले अमृत सम्भवे वं वं ह्रों ह्रौं स्वाहा । सरस्वती भक्ति प्रसादात् सुज्ञान भवतु।

''वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि''

ऊँ ह्रीं सरस्वती देव्यैः नमः

संगति

मित्रो! सत्संगति हमेशा सुख प्रदायनी ही होती है, जो सत्संगति करता है उसके गुणों की वृद्धि दिन दूनी रात चौगुणी होती है। जीवन मूल्यों के विकास के लिए, नैतिक गुणों की उन्नति के लिए सत्संगति बहुत आवश्यक है। जब हम किसी आदर्श पुरुष, सु-संस्कारित व्यक्ति के संसर्ग में आते हैं तो आप अनुभव करना आप उनके गुणों से प्रभावित होकर मन-ही-मन उनके जैसा बनने का सद्-प्रयास प्रारंभ कर देते हैं।

मित्रो! आप स्वयं अनुभव करना, जैसी आप संगति करोगे वैसी आपकी परिणति प्रारंभ हो जायेगी। यदि आपको अपने नगर में, जिले में, प्रदेश में, देश में आदर्श स्थापित करना है तो अच्छे लोगों की संगति करो। **सत्संगति से गुण रहित पुरुष भी महानपने को प्राप्तकर ख्याति प्राप्त कर लेता है।**

युवाओ! इस दुनिया में जो भी उन्नति को प्राप्त हुआ है, जो उत्कर्ष को प्राप्त हो रहा है और जो भी उत्कर्ष को प्राप्त होगा वह मात्र पूज्य पुरुषों की सत्संगति/सत्संग से ही प्राप्त होगा।

सीप के सत्संग से पानी की बूँद मोती बन जाती है, पारसमणि के सत्संग से लोहा स्वर्ण बन जाता है। समुद्र के सत्संग से नदी समुद्र बन जाती है। सत्संगति वह महाशक्ति है जिसके प्रभाव से जीवन के किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।

संगति का प्रभाव

बालको! विद्युत की धारा एक है। हीटर में तार जोड़ दिए तो गर्म करेगी और वायर फ्रिज में जोड़ दिए तो जमा देगी, ठण्डा शीतल करेगी। ये सब किससे हो रहा है, संगति।

अग्नि दाहक है, अग्नि पाचक है, अग्नि प्रकाशक है। अग्नि में ईंधन डाल दो तो दाहक है, जला देगी। भोजन किया तो पाचक है, पित्त प्रकृति। ट्यूलाइट में वायर जोड़ दिया तो वही प्रकाशक है। ऐसे ही, बालको! यह दुर्लभ मनुष्य पर्याय आपको मिली है, अनमोल समय मिला, एक-एक मिनिट आपका कीमती है अब आपके ऊपर है कि- आप इसका क्या प्रयोग करोगे?

एक पानी की बूँद सीप में चली गई तो मोती बनकर निकलेगी, एक बूँद गन्ने पर जाकर टपकी अब वह मधुर रस बनकर सभी का मुख मीठा करेगी। एक बूँद नाग के मुख में चली गई तो वह जहर के रूप में निकलेगी। एक बूँद नीम के वृक्ष पर गिरी तो कड़वी औषधि रूप में परिणमन करेगी। जो जैसी संगति करेगा वह उसी प्रकार वे वैसा बनेगा।

कुसंसर्गःसदा त्याज्यो

युवाओ! कुसंगति का सर्वथा त्याग करो, क्योंकि जैसी संगति करोगे वैसी आपकी भाव भंगिमा होगी। अज्ञानी की उपासना करोगे तो अज्ञान ही मिलेगा और ज्ञानी की उपासना करोगे तो ज्ञान ही मिलेगा। ज्ञानी के संसर्ग से अज्ञानी भी पूज्य हो जाता है, पर ध्यान रखना अज्ञानी की संगति से ज्ञानी, संयमी पुरुष भी पतित हो जाता है।

कुसंगतिःअग्नि के समान

बालको! जैसे अग्नि की एक तीली ढेर सारे ईंधन को भष्म कर देती है वैसे ही कुसंगति अग्नि के समान है जो गुणशील को भी पतित कर उसकी ख्याति, प्रशंसा को नष्ट कर देती है।

कुसंगति अग्नि के समान विनाशकारी होती है, जो सम्पूर्ण गुणों को जलाकर भष्म कर देती है। दुराचारी, दुष्ट, क्रूर,

व्यसनी, मायाचारी की कुसंगति से महान् सदाचारी एवं गुणवान् पुरुष भी कलंकित हो जाता है। कुसंगति से गुणी मानव भी क्षणभर में हलका हो जाता है।

बालको! अग्नि के समीप जाओगे तो ताप देगी और यदि अग्नि का अंगारा हाथ में उठा लिया तो झुलसा देगा ऐसे ही कुसंस्कारी, व्यसनी के साथ भी बैठोगे तो लोक में बदनाम हो जाओगे।

बालको! समझना, वेश्यालय में बैठकर भजन भी करोगे तो बदनामी होगी, मदिरालय में बैठकर दूध पिओगे तब भी बदनामी ही होगी।

यद्यपि शुद्धं, लोक विरुद्धं।
न करणीयं, न आचरणीयं॥

मित्रो! रीति-नीति से जीवन जियोगे तो उत्तरोत्तर उत्कर्ष को प्राप्त करोगे। जो रीति-नीति का ज्ञाता नहीं होता है वह कभी भी श्लाघनीय, सराहनीय नहीं हो सकता है। कोई कार्य शुद्ध भी हो, पर लोक विरुद्ध हो तो कभी करने खड़े नहीं हो जाना। **जिससे किसी को शंका खड़ी हो वह कार्य नहीं करना, क्योंकि कलंकित जीवन बहुत कष्टकारी, दुःखदायी होता है।**

घातक शस्त्र : शंका

जगत् में रोगों को औषधि से ठीक किया जा सकता है। रोगों की तो दवा होती है, पर शंका को दूर करने की कोई दवा नहीं है। जितने भी घर मिटे हैं, संघर्ष और युद्ध हुए, मित्रता शत्रुता में परिवर्तित हुई है, तो एक मात्र शंका। **शंका शस्त्र से भी अधिक घातक होती है। हम यदि उत्कर्ष चाहते हैं, तो शंकित जीवन न जियें, अपितु समाधान का जीवन जियें।**

व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में शंका प्रवेश कर जाती है

वहीं से उसका ह्रास होना प्रारंभ हो जाता है। शंकालु व्यक्ति न तो स्वस्थ रह सकता है और न ही किसी का विश्वास पात्र बन सकता है। शंकालु व्यक्ति प्रतिक्षण भयभीत ही रहता है। भयभीत पुरुष कभी एकाग्र चित्त नहीं हो सकता है। शंकालु व्यक्ति अपनों पर ही शंका करके संबंधों में शत्रुता उत्पन्न कर कष्ट को प्राप्त होता है।

शस्त्र इतना घातक नहीं है जितना की शंका करना है। शंका वह शस्त्र है जो अन्दर-ही-अन्दर घात करता है और फिर वह व्यक्ति परिवार, समाज से दूर होता चला जाता है। फिर उसे रोग घेर लेते हैं, लोग संबंध तोड़ लेते हैं, फिर होता है उसका अवनति का जीवन प्रारंभ। शंकाशील व्यक्ति घुण लगे अनाज की तरह शुद्धि, विवेक से रिक्त हो जाता है।

सुरक्षा करें, शंका से

जीवन में समुन्नति, समृद्धि, उत्कर्ष प्राप्त करना है तो सर्वप्रथम शंका से अपनी रक्षा करें। **अधिकाशतः व्यक्ति व्यर्थ की शंका को जन्म देकर अपने सुखद जीवन में दुःख का आमंत्रण देते हैं।**

जैसे शूल (काँटा) वेदना देता है वैसे ही शंका जो है वह शूल से भी अधिक कष्ट देती है। शंका के जाल में फँसा व्यक्ति अंदर-ही-अंदर घुटता है, पर कुछ कर नहीं पाता है।

युवाओ! शंका से हर समय अपनी रक्षा करना। सीता जैसी शीलवंत नारी को शंका के कारण अग्नि परीक्षा देना पड़ी। आज-कल मित्रता में शत्रुता क्यों हो रही है? शंका। पत्नी पति को कोर्ट में ले जा रही है क्यों? शंका। इसलिए बालको शंका से अपनी रक्षा करो।

सहन करो : सम्मान मिलेगा

बालको ! सत्संगति से मिट्टी भी सम्मान को प्राप्त करती है। मिट्टी जब कुम्भकार की संगति में आती है तो वह कलश बनकर शीश पर शोभायमान होती है। बनना है, सम्मान प्राप्त करना है तो सहन करना सीखो। **जो सहन कर लेता है वह लोक में पूज्यता को प्राप्त करता है।**

श्रीराम को पिता के आदेश पर जंगल में निवास करना पड़ा, परन्तु श्रीराम ने संक्लेशता नहीं की, अपितु संकटों को झेलते हुए, सहन करते हुए समय व्यतीत किया, इसी का सुफल था कि– उन्हें पुनः राज्य प्राप्त हुआ और लोक में पूज्यता को प्राप्त हुए। श्रीराम ने समता से सहन किया तो शत्रुओं के द्वारा भी सम्मान को प्राप्त किया, श्रीराम 'वन गए तो बन गए'। **शत्रुओं से भी सम्मान प्राप्त करना है तो सहन करना सीखो। जो-जो सहन कर लेगा वह सम्मान को प्राप्त होगा। स्वर्ण भी अग्नि को सहन करता है तभी कलश बनकर शिखर पर चमकता है। चमकना है, सम्मान प्राप्त करना है तो सहन करो।**

मिट्टी को मिला सम्मान

संगति से मिट्टी भी सम्मान को प्राप्त करती है। **सत्-संगति और सहनशीलता से सम्पूर्ण विश्व पर राज्य किया जा सकता है। जो सहनशील होगा वही दूसरों पर शासन कर पायेगा।** मिट्टी सहन करती है तो सम्मान प्राप्त करती है। कुम्भकार खदान से मिट्टी को खोदता है, फिर गधे पर लाधकर घर लाता है और द्वार पर पटक देता है, फिर पानी में गलाता है, पैरों से रोंधता है, पीटता है फिर लौंदा बनाकर चाक पर रखकर घुमाता है तब कहीं वह मिट्टी मटके का आकार ले पाती है।

मिट्टी ने कलश का आकार लिया उसके लिए कितना सहन किया। गैंती-फावड़े के प्रहारों को सहन किया, पानी में गलना पड़ा, पैरों से रुँधना पड़ा, चाक पर घूमना पड़ा तब कहीं सुन्दर आकार प्राप्त किया, पर अभी भी और सहन करना पड़ेगा तभी सम्मान मिलेगा। अब उसे अग्नि में तपना पड़ेगा, जब तपकर सुरक्षित बाहर आयेगा तो सेठ दाम देकर उसे खरीदकर अपने घर ले जायेंगे, फिर उसमें जल भरेंगे अब उस मिट्टी का सम्मान प्रारंभ हो गया, कीमत हो गई।

युवाओ! जीवन में सम्मान प्राप्त करना है, जगत् से प्रशंसा प्राप्त करना है तो सहन करना सीखो। जो सहन करना सीख लेगा वह सफलता की सीढ़ी चढ़ना प्रारम्भ कर देगा।

डरोगे तो मरोगे

बालको! संकट के समय में घबड़ाना नहीं, **संकटों से संघर्ष करो, संकटों से डरो मत, क्योंकि जो डर गया समझो वह जीवित ही मर गया। संकटों से संघर्ष करना ही तो जीवन है।** जो संकटों से संघर्ष करेगा वही तो सफलता को प्राप्त करेगा। सफलता को प्राप्त करना है, तो संकटों में भी डरो मत, शक्तिपूर्वक आगे बढ़ो। डरना है तो पापों से डरो। **डरना हो तो चुगलखोर से डरना, क्योंकि नाग तो फन मात्र से डसता है, परन्तु चुगलखोर सर्वांग से डसता है।**

भय का भूत जिसे लग जाता है उसे दिन में डर लगता है। भयभीत पुरुष किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता है। **निडर व्यक्ति ही निशंक होकर सफलता की डगर पर चल सकता है। भयभीत व्यक्ति काल्पनिक भूत के भय से ही मरण को प्राप्त कर लेता है। जगत् के अधिकांशत: जीव काल्पनिक भूतों के भय से भयभीत रहते हैं और भ्रम के जाल में फँसकर प्राण गँवा देते हैं।**

युवाओ! जीवन का एक-एक पल बहुमूल्य, अनमोल, कीमती है। जीवन की धारा को भय, चिंता, क्रूरता, संक्लेशता, क्रोध, मान, अहंकार, ईर्ष्या, शंकादि में मत जाने दो। **दुर्गुण अवनति की ओर ही ले जाते हैं, इसलिए इनसे प्रयत्नपूर्वक अपनी रक्षा करो।**

जो भय-चिंता, ईर्ष्या-संक्लेशता, मान, अहंकार की कुसंगति करता है उसके सम्मान, ख्याति यश की मृत्यु हो जाती है। भयभीत पुरुष अशांति का जीवन जीता है। मित्रो! जीवन जीते-जीते जियो, मरते-मरते मत जियो।

भय का भूतः मत करो भूल

एक बार जंगल में कुछ अजीब सी आवाज आई, जानवरों ने सुनी और कुछ जानवर इतने भयभीत हुए की दूसरी ओर बिना किसी सोच-विचार के भागने लगे, क्योंकि उन्हें भय का भूत लग गया था।

कुछेक जानवरों ने भयभीत जानवरों से पूछा कि- आप लोग कहाँ भागे जा रहे हैं? उन्होंने कहा कि- इधर भूत है वह अजीब-अजीब आवाजें कर रहा है सो हम बचने के लिए प्राण बचाकर भाग रहे हैं। उन्हें देखकर बहुत से जानवर उनके पीछे शहर की तरफ भागने लगे।

जंगल के राजा शेर ने देखा कि- सभी जानवर शहर की तरफ भागे जा रहे हैं, बात क्या है? शेर ने लोमड़ी से पूरी जानकारी ली और सोचा कि- यदि जानवर शहर की ओर जायेंगे तो जंगल ही खाली हो जायेगा। शहर में मनुष्य या तो जानवरों को बंधक बना लेंगे या मार देंगे, इसलिए इनकी रक्षा करना चाहिए।

शेर ने भागते हुए जानवरों को रोका और कहा कि- मैं उस भूत का अंत कर दूँगा, फिर तुम निडर होकर जंगल में विचरण

करना। शेर की सीख से जानवरों को राहत मिली। फिर सभी ने विचार किया कि- जो मनुष्य जंगल में आकर हमें मार देते हैं तो शहर में हम सुरक्षित कैसे रहेंगे? शहर में जाना तो हमारी बहुत बड़ी भूल होगी।

शेर ने लोमड़ी से पूछा कि- भूत कहाँ पर है? लोमड़ी ने कहा कि हमें तो चीता ने बताया था। चीता से पूछा तो वह बोला हमें तो भालू ने बताया। इस तरह एक-का-एक बोलते गए। सबसे अंत में खोज-खबर यह की गई कि- सबसे पहले यह बात किसने- किससे बोली? पता चला कि- गधे ने सबसे पहले यह खबर फैलाई कि- उस ओर भूत है और वह सबको खा जायेगा।

शेर बड़ा ही समझदार था। वैसे भी समझदार लोग ही सब पर राज्य कर पाते हैं। **ज्येष्ठ पुरुषों की सोच भी श्रेष्ठ होती है। जिसका चिंतन सम्यक् एवं विशाल होगा वही संकट से बच सकता है।**

बालको! जीवन में उत्कर्ष प्राप्त करना है, तो अपने चिंतन को विराट् करो। **ऊँची सोच, सम्यक् चिंतन ही व्यक्ति को महान् और महत्त्वपूर्ण बनाता है। जहाँ क्षुद्र, दरिद्री लोगों की सोच समाप्त होती है, उससे कहीं बहुत आगे से श्रेष्ठ, महान् व्यक्तियों की सोच प्रारंभ होती है। पुण्यहीन की सोच भी निम्न ही होती है।** संकुचित मानसिकता जिसकी होगी वह उतना ही सोचेगा, इसलिए सोच को दायरे में मत समेटो। ऊपर उठना है तो विचारों को विराटता दो। **उच्च विचार ही ऊँचाईयों को प्रदान करते हैं। व्यक्ति के विचारों की धारा जैसी होगी उसकी जीवन धारा भी वैसी ही होगी।**

युवाओ! मेरी बात को हमेशा ध्यान में रखना। **आपके वर्तमान के विचार ही आपके भविष्य के निर्माता हैं।** बबूल

के बीज से बबूल के वृक्ष लगते हैं। **आपके भूत का विचार वर्तमान का जीवन है और आपके वर्तमान का भाव भविष्य का नियंता है।**

पुनः अपने विषय पर आओ। जंगल में पहुँच जाओ। शेर ने गर्दभ की ओर देखा और पूछा कि- हे गर्दभ! क्या आपने भूत को देखा? गधे के नेत्र झुक गए। वह शेर से डरते हुए बोला कि- हे राजन्! मुझे क्षमा करें। मैंने तो एक आवाज सुनी और भागना प्रारंभ कर दिया।

शेर ने भी सोचा कि- गधा तो गधा ही है। 'ग' अर्थात् गलत, 'धा' अर्थात् धारणा। जिसकी धारणा गलत है वही है 'गधा'।

सम्पूर्ण पूछ-ताछ के पश्चात् सार यह निकला कि- मात्र काल्पनिक भूत था, भय का भूत था। फिर भी आवाज किसकी थी यह मालूम करना आवश्यक था, अतः शेर उस ओर गया जहाँ से आवाज आई थी। कुछ दूरी पर जाकर देखा तो वहाँ एक फूटा हुआ बलून पड़ा हुआ था। शेर को पूरी बात समझ में आ गई। शेर सभी जानवरों को वहाँ ले गया और फिर असलियत का बोध कराया।

इस प्रकार शेर की सूझ-बूझ से जंगल के जानवरों का संकट टल गया। **बालको! संकट के आने पर, संकट को देखकर भागो मत, डरो मत। अपनी सामर्थ अनुसार उससे छुटकारा पाने का पुरुषार्थ करो।**

आलस बुरी आदत

बालको! जीवन में कभी आलसी नहीं बनना। **विद्यार्थी जीवन में सबसे बड़ा कोई शत्रु है तो वह आलसी, अकर्मण्य, निकम्मा, सुस्त, शिथिल, स्फूर्तिहीन है।**

मित्रो! अधः पतत, अवनति, अपकर्ष, पतन का कोई प्रबल कारण है तो वह अकर्मण्यता, आलस्य है। असफलता का कोई हेतू है, तो आलस। अस्पताल का मुख उसी को देखना पड़ता है जो आलसी होगा।

अच्छी आदतें

बालको! **जीवन में स्वस्थ रहना है तो सूर्य उदय के पहले उठ जाओ। स्वच्छ शाकाहारी अल्प भोजन करो। देर रात तक अत्र-तत्र विचरण मत करो। प्रतिदिन योग- ध्यान करो। अच्छा साहित्य पढ़ो। बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो।**

जो प्रातः जल्दी उठेगा, स्वच्छ जल से स्नान करेगा, मुख स्वच्छ रखेगा, स्वच्छ वस्त्र पहनेगा, स्वच्छ भोजन करेगा, बड़ों की विनय करेगा, प्रभु का भजन करेगा वह कभी रुग्न नहीं होगा। बीमारियाँ, रोग उससे दूर रहेंगे।

शाकाहार : उच्च विचार

भैया! **जैसा भोजन होगा, वैसा आपका विचार बनेगा।** शाकाहार करोगे तो विचार भी उच्च होगा । विचारों की ऊँचाईयाँ छूना है तो शाकाहार करो। मेरा प्रश्न है आपसे, क्या कभी श्रीराम ने, श्रीकृष्ण ने मांसाहार किया? नहीं। मांसाहार करना तो महापाप है।

भगवान् महावीर ने विश्व के प्राणी मात्र की रक्षा के लिए एक अनुपम सर्वमान्य सूत्र प्रदान किया कि- **'जियो और जीने दो'। आप जियो और दूसरे जीवों को भी जीने दो। प्रत्येक जीव को जीने का अधिकार है, दूसरे के अधिकारों का हनन करना घोर अपराध है।** विचारों की उच्चता प्राप्त करना है तो शाकाहारी बनिये। जीवों को अभयदान दो। मूक प्राणियों की पुकार सुनो।

तन-मन को स्वस्थ रखना है तो हमेशा शाकाहार करें। **मांसाहार मनुष्य के लिए न तो हितकर है और न ही स्वास्थानुकूल।** जो मांसाहारी जानवर होते हैं उनके दांत लम्बे-लम्बे होते हैं तथा वह जिह्वा से चाँटकर पानी पीते हैं। **जानवर के कार्य मानव करे तो यह शोभा नहीं देता है।**

मांस सेवन मानवानुकूल प्रवृत्ति नहीं है। अपनी उदर पूर्ति के लिए मूक पशुओं की हत्या करना, उनका वध करना घोर अनाचार है, यह मानवोचित प्रतीत नहीं होता है। **विश्व में जितने भी श्रेष्ठ चिंतक, लेखक, श्रेष्ठ वक्ता हुए हैं वे सभी प्रायः शाकाहारी ही थे और वर्तमान में हैं।**

आप स्वयं विचार करना कि- मूक प्राणियों का वध करके क्या आप शांति से जी पाओगे? क्या उनकी दर्द भरी चीत्कार आपको शांति से रहने देगी? कभी नहीं।

बालको! प्रत्येक जीव सुख चाहता है, कोई जीव कष्टमय जीवन व्यतीत करना नहीं चाहता, उन जीवों में आप भी एक जीव हैं। क्या आप कष्ट-दुःख चाहते हैं? उत्तर आएगा नहीं। **जब आप कष्ट नहीं चाहते तो फिर दूसरों को कष्ट में डालना क्या उचित है?** नहीं है।

युवाओ! विश्व के सभी धर्मों में कोई श्रेष्ठ सार की बात है तो यही है कि- **"जैसा आप स्वयं के प्रति चाहते हो वैसा ही दूसरे के साथ भी करो"**। जियो और जीने दो।

उत्साह उन्नति का आधार

जीवन में उत्कर्ष करना है, समृद्धि प्राप्त करना है, वृद्धि को चाहते हो, उन्नति की चाह है, **समुन्नत विकास करना है तो उमंग, उल्लास, जोश, हुलास, हौसला होना आवश्यक है। उत्कर्ष के लिए उत्साह बहुत आवश्यक है।**

संसार में साधन और अवसर मिलने के उपरान्त भी उत्साह, उमंग के अभाव में लोग कार्य तो प्रारंभ कर देते हैं, परन्तु कुछ दिन बाद उस कार्य को बीच में छोड़ देते हैं। आपकी शरीरिक क्षमता अल्प हो, साधन सीमित हों, परिस्थितियाँ विपरीत हों, पर यदि उमंग-उत्साह है, तो समय लग सकता है, लेकिन सफलता आपके पास होगी या आप लक्ष्यपूर्णता के समीप होंगे।

लक्ष्य की प्राप्ति में जितनी आवश्यकता साधनों की है उससे कहीं अधिक जरूरत है उमंग, उत्साह शक्ति की, जिसका उत्साह भंग हो गया उसकी हार, विफलता निश्चित है। यदि आपने कोई कार्य प्रारंभ किया और आप विफल हो गए, तो निराश होने की जरूरत नहीं है, पुनः एक प्रयास कीजिए। अपना पुरुषार्थ तब-तक करते रहें जब-तक सफलता को प्राप्त न कर लें।

उत्साह, उमंग, हौसला देखना है तो दीवार पर रैंगती चींटी को देखना वह दीवार पर चढ़ने का पुरुषार्थ करती है, अनेक बार गिरती है, परन्तु पुनः पुनः अभ्यास करती है और दीवार पर चढ़ ही जाती है। एक चींटी जब उत्साह में होती है तब अपने से भी अधिक वजन की सामग्री को खींचकर अपने बिल में ले जाती है। किसके बल पर, एक मात्र उत्साह शक्ति।

युवाओ! **उत्साह शक्ति महान् शक्ति है।** जब उमंग होती है, उत्साह होता है तो साठ साल के वृद्ध दादा भी दौड़ लगाते मिलते हैं और उमंग नहीं है, जोश नहीं है तो बीस वर्ष का युवा भी ढीला-ढाला दिखाई देता है।

एक चाय बेंचने वाला देश का प्रधानमंत्री बन गया कैसे? उत्साह, उमंग। **जितने भी जीवन में सफल हुए हैं, जितने भी**

लोग सफल हो रहे हैं, जितने भी भविष्य में सफल होंगे वह उमंगपूर्ण, उल्लसित, हुलासपूर्ण, उत्साही जीवन जीने वाले ही होंगे।

भाईयो! जीवन में सफल होना है तो एकाएक कोई बड़ा कार्य अपने मथ्थे नहीं लेना। **जीवन की सफलता के लिए रीति-नीति का ज्ञान होना भी आवश्यक है। सफलीभूत होना है, तो समरसता, संतुलन, तालमेल होना चाहिए। कामयाबी की कामना है, तो सर्वप्रथम छोटे-छोटे कार्य करें उनमें जब सफलता प्राप्त करलें, पश्चात् फिर कोई बड़ा कार्य प्रारम्भ करें।**

जब भी किसी कार्य में सफलता अर्जित हो, जब भी कोई कामयाबी हस्तगत हो तो अपने-आपको बधाई दें, धन्यवाद दें, मन-ही-मन प्रशंसा करें। आप पायेंगे कि आपकी उमंग, उत्साह द्विगुणित हो रहा है।

किसी भी क्षेत्र में आप हों, यदि आप सफल होना चाहते हैं, उत्तीर्ण होना चाहते हैं, हारना नहीं चाहते हैं तो भूलकर भी उत्साह, उमंग, जोश का साथ न छोड़ें। **जोश है तो होश है और होश है तो सफलता है।**

आपने कभी किसी पक्षी को देखा क्या? पर मैंने तो देखा है। चिड़िया आदि पक्षी के जो छोटे-छोटे बच्चे होते हैं वह चिड़िया उनकी पूरी व्यवस्था बनाती है, परन्तु जैसे ही वह बड़े होने लगते हैं तो चिड़िया उन्हें जानकर घोंसले से नीचे गिरा देती है तब वह बच्चे पंख फड़फड़ाते हैं और उड़ने का प्रयास करते हैं। अनेक बार गिरते भी हैं, परन्तु अभ्यास करते-करते आकाश में उड़ान भरना सीख जाते हैं। यदि उनमें उत्साह शक्ति न हो तो वे उड़ न पायें।

विद्वेषी : महाविरोधी

युवाओ! जैसे तुम जहरीले-प्राणियों से अपनी रक्षा करते हो वैसे ही विद्वेषी, ईष्यालु, डाही, जलनखोर, मत्सरी से चौबीस घण्टे अपनी रक्षा करना।

बिच्छु डंक से डंक मारता है, नाग फन से फुसकारता है, परन्तु ईष्यालु सर्वांग से डसता है। देश में, समाज में, घरों में जितने भी टुकड़े हुए हैं वह मात्र विद्वेषी, ईर्षालुओं के कारण हुए हैं।

सर्प कदाचित् डंसना छोड़ दे, परन्तु ईर्षालु ईर्षा करना नहीं छोड़ता है। **ईष्यालु से कभी अपने गुणों का, कार्य का जायजा नहीं कराना। आप कितना भी अच्छा कार्य करोगे, लेकिन ईष्यालु आपकी प्रशंसा, बड़ाई, यशोगान, नहीं कर सकता है।**

आपके बड़े से बड़े कार्य को ईष्यालु छोटा ही बतायेगा, इसलिए ईष्यालु से कभी कोई सलाह न लें। जब भी आवश्यकता हो तो अपने बड़ों या अपने चाहने वाले मित्रों, प्रशंसकों, परिजनों से सलाह लें जो आपके हितैषी हों और आपको सम्यक् राह दिखा सकें।

ईष्यालु की ईर्षा

बालको! आपको एक कहानी सुनाता हूँ। एक गाँव में एक जलनखोर, ईष्यालु रहता था। उस ईष्यालु को ग्राम वासियों को परेशान करने में ही आनंद आता था। ग्रामीण लोग उस विघ्न संतोषी से हमेशा बचकर रहते थे।

एक बार उस ईष्यालु ने एक महात्मा को अपनी सेवा से

प्रसन्न कर लिया। महात्मा ने कहा कि- माँग ले जो माँगना है, वह जलनखोर अंदर-ही-अंदर खुश हो गया। पर चतुर था, सो अपनी चतुराई लगाकर बोलने ही बाला था कि- सोचने लगा कि- क्या माँगा जाए। मन-ही-मन पड़ोसी के विनाश की योजना बनाने लगा। महात्मा भी बड़े पहुँचे हुए थे, वे भी समझ गए कि- दाल में कुछ काला है, इसके भाव कुछ ठीक नहीं लग रहे हैं।

उस जलनखोर ने महात्मा से एक मकान माँग लिया। महात्मा जी ने तथास्तु बोल दिया। वह अपने गाँव पहुँचा और देखता है कि- झोंपड़ी के स्थान पर एक सुन्दर मकान बन गया है, बहुत गद्‌गद् हुआ, खुश हुआ। **इस दुनिया में आदमी जितना अपने दु:ख से दु:खी नहीं है उससे कहीं अधिक दूसरे के सुख को देखकर के दु:खी होता है।**

वह ईर्षालु जैसे ही अपने पड़ोसी की झोंपड़ी की ओर देखता है तो दु:खी हो जाता है, क्योंकि पड़ोसी के दो मकान बने हुए थे। अब वह परेशान, क्या करे? उसे महात्मा की बात याद आ गई। महात्मा जी ने कहा था कि- जो भी माँगोगे उससे दोगुना आपके पड़ोसी को फलित होगा।

वह पुन: महात्मा को प्रसन्न करता है और कहता है कि- मेरे घर के सामने एक कुआ खुद जाए, तो पड़ोसी के घर के सामने दो कुए खुद गए।

अब ईर्षालु तो ईर्षालु है। वह दूसरे को गिराने में यह नहीं देखता है कि- यदि मैं अग्नि का अंगारा पड़ोसी पर फेंकूँगा तो मेरे हाथ तो पहले जलेंगे। उसने इस बार महात्मा से माँगा कि- मेरी एक आँख फूट जाये। महात्मा उसकी चाल समझ गए और बोले भाई मैं किसी के अहित के लिए वरदान नहीं देता हूँ।

भाईयो! यह दशा है आज के मनुष्यों की, पड़ोसी को गड्ढे में गिराने के लिए स्वयं कनुआ होना पसंद कर लिया।

बालको! जीवन में कभी किसी का अच्छा कर सको तो अवश्य करना, पर किसी का बुरा करना तो दूर ही है बुरा विचारना भी नहीं, क्योंकि किसी के सोचने से किसी का अहित नहीं होता है, परन्तु हम बुरा सोचेंगे तो उसका बुरा हो या ना हो पर अपना तो बुरा हो ही जायेगा।

जीवन में हमेशा याद रखना कि- जो दूसरों को गड्ढा खोदता है वही गड्ढे में गिरता है, इसलिए **अच्छा सोचो, अच्छा बोलो, अच्छा करो।** छोटे-छोटे सूत्र हमारे जीवन में बहुत उपयोगी हैं। **अपनी लाइन बड़ी करो, किसी की लाइन मिटाने मत जाओ।**

तुम सोच ही पाओगे, कर कुछ नहीं पाओगे, रोते रह जाओगे। वस्तु व्यवस्था व्यवस्थित है हम उसमें फेर- बदल नहीं कर सकते हैं। जैसा जिसका नियोग है वैसा होगा- ही-होगा। जो है सो है। बुरा मत सोचो, बुरा मत बोलो, बुरा मत करो।

बुरा करोगे तो बुरा होगा

भैया! कभी भी किसी का अहित नहीं करना और किसी का अहित हो जाय यह सोचना भी नहीं, क्योंकि आप किसी का बुरा सोच ही पाओगे, पर कर कुछ नहीं पाओगे। जो पर का बुरा सोचता है उसका बुरा हो या न हो, पर आपका बुरा तो होना ही है।

एक राज्य था। उस राज्य के राजा और मंत्री में बहुत घनिष्ठता थी। मंत्री विद्वान् था, सो उसकी बुद्धिमानी से राज्य व्यवस्था बहुत अच्छी चल रही थी।

कुछ नाइयों ने मिलकर राजा से मंत्री की शिकायत कर दी, पर राजा और मंत्री की घनिष्ठता कम न हुई। नाईयों ने पड़ोसी राज्य के मंत्रियों से मिलकर मंत्री के प्रति षड़यंत्र रचा। एक दिन एकांत पाकर एक नाई राजा से बोला कि- राजन्! रात्रि

में मुझे स्वप्न में आपके दादा जी दिखे, वह कह रहे थे कि – तुम्हारा राजा कैसा है? पूर्वजों का कोई समाचार ही नहीं लेता है।

राजा ने नाई से पूछा कि– भाई! दादा तो एक वर्ष पूर्व मर चुके हैं, अब पता नहीं वह कहाँ होंगे? नाई बोला राजन्! मुझे मालूम है वह स्वर्ग में हैं। नाई ने षड़यंत्र करके राजन् से कहा कि– आप मंत्री को स्वर्ग भेज दो जिससे वह पूर्वजों से मिलकर आयें कहीं कोई आवश्यकता तो नहीं है।

राजा ने मंत्री को आदेश कर दिया कि– आपको अतिशीघ्र पूर्वजों से मिलने स्वर्ग जाना है। यह अनोखा आदेश सुनकर मंत्री अवाक् रह गया, पर मंत्री समझदार था। राजाज्ञा का उल्लंघन करूँगा तो फाँसी पर चढ़ा दिया जाऊँगा, अत: राजाज्ञा शिरोधार्य।

मंत्री ने अपनी प्रज्ञा से षड़यंत्र की जानकारी लगा ली कि– पड़ोसी राज्य और यह नाई मिलकर राज्य हड़पना चाहते हैं, पर मजबूर था। मंत्री ने षड़यंत्र से बचने का उपाय सोच लिया।

मंत्री, राजा से कहता है स्वामी! मैं तीन दिन पश्चात् स्वर्ग जाऊँगा। कुछ सामग्री साथ में लेकर जाऊँगा, क्योंकि ज्येष्ठों के पास कुछ-न-कुछ भेंट लेकर जाना पड़ता है। मंत्री ने राजा से कीमती रत्नादि बोरों में भरकर ले लिए और विदाई लेकर चल दिए और बोले स्वामी! मेरी इच्छा है कि– मैं कुछ दिन वहीं ठहरना चाहता हूँ। मंत्री छह माह का समय लेकर चल दिए।

मंत्री ने रत्नों की राशी तो घर में लेजाकर रख दी और अपनी पत्नी से बोले कि– आज से मैं महल में ही रहूँगा, परन्तु गुप्त रूप से। यदि कोई मुझे बुलाने आये तो कह देना मंत्री जी स्वर्ग गए हैं, छह माह पश्चात् आयेंगे।

विरोधियों ने खुशियाँ मनाना प्रारंभ कर दिया कि– मंत्री अब कभी लौटकर नहीं आयेगा। पर यह भूल गए थे कि–

मायाचारी कभी भली नहीं होती है। सेर को सवा सेर मिल ही जाता है। जो दूसरों को गड्ढा खोदते हैं वह स्वयं ही उस गड्ढे में गिरकर प्राण गवाँते हैं।

जब छह माह व्यतीत हो गए, तो मंत्री ने राजा के पास एक पत्र भेजा। राजा ने उत्सव के साथ मंत्री को नगर प्रवेश कराया। राजा ने मंत्री का भरपूर सम्मान कराया और अपने पूर्वजों के हाल-चाल पूछे।

मंत्री ने कहा 'राजन्! आपके सभी पूर्वज सुख से हैं, मात्र एक समस्या है कि- वहाँ हज्जाम (नाऊ) नहीं हैं, इसलिए उनके बाल बहुत बड़े-बड़े हो गए हैं, अतः यहाँ से कुछ नाई कुछ दिनों के लिए वहाँ भेज दिए जावें। राजा ने आदेश कर दिया कि राज्य के सभी नाई स्वर्ग जाएँ एवं वहाँ हमारे पूर्वजों की हजामक करें।

जितने विरोधी नाई थे सभी के होश उड़ गए कि- हमारे प्राण जाना निश्चित है। तभी मंत्री ने राजा से कहा कि- राजन् मैं जिस साधन से गया था उसमें बहुत देर लगती है, अतः इन्हें दीवार में चुनवा दो तो शीघ्र स्वर्ग पहुँच जायेंगे।

राजा ने नाईयों को दीवार में चुनवा देने का आदेश दे दिया। अब यदि मना करते हैं तो भी मृत्यु और असलियत बताते हैं तो भी मृत्यु। क्या करें, सभी ने मंत्री के पैर पकड़ लिए और क्षमा माँगने लगे। मंत्री ने अपनी युक्ति से नाईयों की प्राण रक्षा की। इसलिए जीवन में या तो भला करो, पर भूलकर भी किसी का बुरा मत करो।

उपकार कभी मत भूलो

जीवन में कभी भी उपकारी का उपकार नहीं भूलना। उपकारी के उपकार को भूलकर जो उपकारी का ही अपकार करने खड़ा हो जाये उससे बड़ा पापी संसार में और कोई नहीं है।

बेटा! जिस माँ ने तुम्हें गर्भ में नौ माह रखा, तुम्हारे वजन को ढोया, जन्मदिया, पढ़ाया-लिखाया। संस्कारवान् बनाया। इतना योग्य बनाया कि- आज आपकी समाज में इज्जत है। **माँ शिशु के लिए प्रथम पाठशाला होती है।** ऐसे उपकारी माता-पिता को भुलाना क्या मानवता है? नहीं।

कभी भी अपने माता-पिता के उपकार को नहीं भुलाना, उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई खोटा काम नहीं करना जिससे की उनका कुल कलंकित हो जाए। अपने कुल की, समाज की, राष्ट्र की आन-बान-शान का ध्यान रखना। आपके कारण समाज का सिर तो उठे, पर सिर नीचा न होने पाये।

बच्चो! जिस माता-पिता ने तुमको सब कुछ दिया, क्या तुम वृद्ध अवस्था में उनको वृद्धाश्रम में छोड़ दोगे? नहीं ऐसा कभी नहीं करना, स्वयं सेवा करना। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे बच्चे भी तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।

गाँववासियो! मेरा आपसे कहना है कि- अपने बूढ़े बैलों को, गायों को बूचड़खानों में मत भेजो। **जिस गाय ने तुमको जीवन भर दूध दिया, जिस बैल ने तुम्हारा बोझा ढोया क्या उनको कत्लखानों में भेजना अपराध नहीं है? घोर अत्याचार है। कृष्ण की गायों को यदि तुम कत्ल करबाओगे तो आप भी खुश नहीं रह पाओगे। थोड़ा तो विचार करो, यह कहाँ तक उचित है?**

यदि आपके घर में उन्हें खिलाने को नहीं तो भाग्य भरोसे छोड़ दो पर उन्हें कसाईयों के हाथ में मत सोंपो।

ओ हो! क्या समय आ गया है? अपने ही लालों के टुकड़े कराकर नाली में बहा रहे हैं। अपनी इच्छा पूर्ति के लिए भ्रूण

हत्या करा रहे हैं। मत करो यह महापाप, इसका फल तुम्हें नरकों में भोगना पड़ेगा। जितने सांप के काटने से लोग नहीं मरते उससे भी अधिक सांपों को मनुष्य मार डालते हैं। भैया! अपनी रक्षा करो, पर मूक प्राणियों के प्राण हरण मत करो। जियो और जीने दो।

अधिकार तो सभी माँगते हैं, पर अधिकार माँगने के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों का भी पालन करो। यदि देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों का पूर्ण पालन करे तो कितना विकास हो। यदि देश के नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करें, तो न पुलिस की आवश्यकता है और न ही न्यायालय की।

आत्मानुशासक बनो

जिसके जीवन में अनुशासन नहीं है, वह कभी भी किसी का आदर्श नहीं बन सकता है। दुनिया में आदर्श बनना है, तो सर्वप्रथम अनुशासन सीखो, अनुशासन में जीवन जियो।

नदी को तट की, गाड़ी में नटकी, सागर में सीमा की, अश्व में लगाम की, हाथी में अंकुश की, ऊँट में नकेल की, घर में द्वार की, खेत में बाढ़ की, गृहस्थी में संयम की आवश्यकता है नहीं तो अनर्थ हो जायेगा इसी प्रकार एक विद्यार्थी को अनुशासित होना चाहिए। यदि अनुशासन नहीं होगा तो मनुष्य होने से क्या लाभ?

दूसरों के अनुशासन में तो पशु भी रह लेते हैं, फिर मनुष्य होने से क्या लाभ? **आपको विश्व पर राज्य करना है, तो स्वयं पर स्वयं का अनुशासन करो, आत्मानुशासक बनो। स्वयं को ही स्वयं आदेश देना सीखो और फिर उस आदेश का सख्तीपूर्वक पालन करो।**

जो स्वयं अनुशासन में जीता है वही दूसरों पर शासन करता है। जो स्वयं ही अनुशासित नहीं है, वह क्या दूसरों पर

शासन कर पायेगा? **अनुशासन एक महान् गुण है।** जीवन में उन्नति का सोपान है। **अनुशासित व्यक्ति सभी का प्रिय एवं प्रशंसनीय होता है।**

अनुशासनहीन का कोई भी सम्मान नहीं करता है, अपितु अनुशासनहीन को सर्वत्र दण्ड दिया जाता है। आदर्श स्थापित करना चाहते हो तो अनुशासन में रहो, आत्मानुशासक बनो।

संत हो या साहूकार अथवा कोई शासक वह प्रशंसा का पात्र तभी हो पाता है जब वह अनुशासन प्रिय होता है। अनुशासन समुन्नति का आधार है।

जितने भी भारत की भूमि पर पूज्य पुरुष हुए हैं वे नैतिकता के धरातल पर अनुशासन प्रिय बनकर रहे हैं। जो अनुशासन प्रिय होता है वही आत्मानुशासक बनकर विश्व में पूज्यता एवं प्रशंसा को प्राप्त होता है।

संस्कार : सुख की राह

जिसके जीवन में संस्कार नहीं वह श्रेष्ठता को प्राप्त नहीं कर सकता है। मंत्रों के संस्कार से पाषाण भी पूज्य हो जाता है। संस्कार से गंधक, कुचलादि विष भी अमृतौषधि बन जाता है। **संस्कार से सामान्य पुरुष भी पूज्य हो जाता है।** संस्कार मनुष्य जीवन की श्रेष्ठ धरोहर है।

संस्कार ही मनुष्य को पशुओं से भिन्न करते हैं। संतान को जन्म तो पशु भी देना जानते हैं, पर मनुष्यों की संतान संस्कारवान् होती है। संस्कारशील नागरिक ही देश की पूँजी हैं। **जो जनक-जननी संतान को जन्म देकर संस्कार नहीं देते हैं, वे संतान के शत्रु हैं।**

मित्रो! अपने परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र को गौरवान्वित करना है, तो संतान को आधुनिक साधनों के साथ-साथ संस्कारों

का उपहार भी दो। **संस्कारशील संतान ही सनातन धर्म परम्परा को जीवित रख पायेगी।**

जो संस्कारों से सु-संस्कृत हो वह संतान है और जो जनक-जननी को ही लड़-लड़ कर घर से निकाल दे वह लड़का है। बालको! कभी-कभी श्रवणकुमार की कहानी भी पढ़ लिया करो। ओहो! धन्य हो ऐसे सुपुत्र को जिसने अपने अंधे माता-पिता की अंतिम समय तक सेवा की। घर-घर में श्रवण कुमार हो जाएँ तो सम्पूर्ण घरों में खुशहाली हो जाए।

संस्कार संस्कृति के रक्षक होते हैं और साथ ही होते हैं परिचायक भी। जैसे संस्कार होंगे वैसी संस्कृति होगी, अतः संस्कृति के नियंता भी हैं संस्कार।

जब-जब संस्कारों का ह्रास होता है तब-तब संस्कृति धूमिल होती है। संस्कृति का मूलाधार ही संस्कार हैं, **संस्कारों की श्रेष्ठता के बिना संस्कृति का विकास संभव नहीं है। जैसे-जैसे संस्कारों का ह्रास हो रहा है वैसे-वैसे संस्कृति का विनाश हो रहा है।** संस्कारों के अपकर्ष से मात्र नैतिक अवनति ही नहीं होती, अपितु आर्थिक अवनति भी होती है।

वर्तमान में लोग बीमार क्यों हो रहे हैं? क्योंकि अपनी मूल संस्कृति एवं संस्कारों से दूर हो गए हैं। पहले के समय में लोग घर में भोजन करते थे, बची हुई रोटी गाय या किसी जानवर को खिलाते थे और शौच के लिए बाहर जाते थे, परन्तु फिलहाल कुछ कायदे-कानून ही विचित्र हैं लोग बाहर होटलों पर खाते हैं और घर में शौचालय शौच जाते हैं, पूरी गंदगी घर के नीचे टेंक में रखते हैं। शौचालय की बदबू रसोई घर में आती है और रसोई की सुगंध शौचालय में। बची हुई रोटी आज-कल गाय और

श्वान को नहीं मिलती, क्योंकि घर में फ्रीज आ गया है। आप स्वयं सोचें की आप स्वस्थ कैसे रह सकते हैं?

जिसकी जैसी संगति और संस्कार होंगे वैसा ही उसका जीवन होगा। **संस्कारों से ही व्यक्ति के कुल की पहिचान होती है। बचपन में जनक-जननी के द्वारा दिए गए संस्कार ही व्यक्ति के भविष्य की दशा और दिशा निर्धारित करते हैं। बालको! अपने जीवन में संस्कारों को नहीं भूलना। संस्कार ही श्रेष्ठ बनाते हैं। संस्कार शून्य जीवन पशु तुल्य है।**

जो संस्कारों की राह पर चलता है वही सुख, शांति एवं आनंदपूर्ण जीवन जी पाता है। संस्कार शून्य जीवनभर दुःख एवं कष्ट का जीवन जीता है। संस्कार शुभ सूचक हैं।

माँ छोटे बालक को लेकर मंदिर जाती है तो बालक भी माँ जैसा करता है। माँ के द्वारा प्रदत्त पूँजी से ही संतान जीवन के संघर्ष में विजयी होता है।

बालको! कुसंस्कारों की संतति अति दीर्घ है, पूर्व भवों के संस्कार वर्तमान भव में भी प्रभावित करते हैं। **सिंह श्वान पर झपटता है, श्वान बिल्ली को पकड़ता है, बिल्ली चूहे को दबोचती है, मयूर भुजंग को मारता है, भुजंग मेढ़क को और मेढ़क मछली को अपना शिकार बनाता है। धनिक को देखकर निर्धन गुर्राता है, ब्रह्मचारी को देखकर कामी कसमसाता है। यह सब क्या है? यह सब पूर्व कुसंस्कारों की महिमा है।**

जीवन में जनक-जननी, परिवार-पुरजनों का बहुत प्रभाव पड़ता है। **जीवन में उत्कर्ष प्राप्त करना है तो बालको अच्छे मित्र बनाना, अच्छा साहित्य पढ़ना। साहित्य हमारे जीवन का सच्चा और अच्छा साथी तो होता ही है, अपितु पथ-प्रदर्शक भी।** आओ हम सभी संस्कारित हों, संस्कारों की राह चलें।

संकल्प

बालको! यदि आपको आदर्श बनना है, तो आज संकल्प करलेना कि-

1) मैं कभी भी अनैतिक कार्य नहीं करूँगा, परिवार, समाज एवं राष्ट्र की अवनति हो ऐसा कार्य कभी नहीं करूँगा।

2) मैं हमेशा बड़ों की विनय एवं छोटों को वात्सल्य, स्नेह दूँगा।

3) मैं प्रतिदिन कम-से-कम एक ऐसा नेक कार्य करूँगा जिससे मुझे आत्मिक सुख मिले एवं जीवमात्र के लिए कल्याणकारी हो।

4) मैं अपने जीवन में कभी भी मांस, मदिरा का सेवन नहीं करूँगा।

5) मैं हमेशा अपने कर्तव्यों के प्रति जाग्रत रहूँगा और मेरे व्यवहार से किसी को कष्ट न हो ऐसा प्रयास करूँगा।

6) मैं उपकारी के उपकार को नहीं भुलाऊँगा और जितना, जो कुछ हो सकेगा सामार्थानुसार दूसरों की मदद करूँगा।

7) मैं जूठन नहीं छोडूँगा, जितना भोजन करना है उतना ही लूँगा। व्यर्थ में पानी नहीं फेकूँगा।

8) आवश्यकता होगी मैं उतना ही बोलूँगा, शेष समय मौन रहूँगा।

9) किसी भी कार्य के प्रारंभ करने के पूर्व अवश्यकतानुसार अपने हितेषियों से मार्गदर्शन, सलाह एवं सहयोग अवश्य लूँगा।

10) कितनी भी विपरीतता होगी तब भी प्राण घात नहीं करूँगा, अर्थात् आत्म-घात, आत्म हत्या नहीं करूँगा।

11) मैं जहाँ भी रहूँगा उस क्षेत्र में कार्यरत साथियों के साथ परस्पर सहयोग की भावना रखूँगा।

संस्कार की महिमा

जीवन में जो भी सम्मान को प्राप्त हुए हैं, इतिहास में अमर हुए हैं वह संस्कार, संकल्पशक्ति के बल पर ही हुए हैं। आप भी अपने जीवन में संस्कार एवं संकल्प शक्ति की महिमा को जानें, समझें। संस्कारों में अचिन्त्य शक्ति होती है।

एक बार एक जंगल में भीषण आग लग गई। जंगल के जंतु-जानवर प्राण बचाकर इधर-उधर भागने लगे। चारों ओर हा-हा कार मच गया। जैसे ही घोंसले में बैठी चिड़िया ने बाहर झाँक कर देखा तो देखते ही रह गई, कोई भी आग को बुझाने का पुरुषार्थ नहीं कर रहा था, अपितु लोग अग्नि में झुलसते जा रहे थे।

चिड़िया ने समीप स्थित सरोवर की ओर उड़ान भरी सरोवर में डुबकी लगाई अपने दोनों पंखों को पानी से भिगोया, चोंच में पानी भरा और जंगल की ओर उड़ान भर दी जंगल में पहुँच कर जहाँ अग्नि लगी थी वहाँ अपने पंखों को फड़फड़ाया, चोंच का पानी अग्नि पर डाला और उड़ान भरी सरोवर की ओर। घोंसले में बैठे छोटे चूजे ने देखा कि- माँ क्या कर रही है। चूजा घोंसले से बाहर निकला और माँ के पीछे-पीछे उड़ान भरने लगा वह भी पंखों को गीला करता चोंच में पानी भरता और अग्नि को बुझाने का असफल पुरुषार्थ प्रारंभ कर दिया।

वहाँ एक बंदर बैठा हुआ था, उसे कुछ समझ नहीं आया या कहो सहन नहीं हुआ। वह चिड़िया से पूछता है कि- हे चिड़िया! तू यह क्या कर रही है? चिड़िया कहती है कि- अग्नि को बुझाने का प्रयास कर रही हूँ।

बंदर कहता है कि- रे चिड़िया! तेरे इस प्रयास से, पुरुषार्थ से क्या जंगल की आग बुझ जायेगी? बालको! चिड़िया ने जवाब दिया वह आप जीवनभर नहीं भूलना।

चिड़िया कहती है कि- भाई! मैं जानती हूँ कि- मेरे पुरुषार्थ से जंगल की आग नहीं बुझेगी, परन्तु इतना अवश्य है कि- जब भी इतिहास लिखा जायेगा तब मेरा नाम अग्नि लगानेवालों में नहीं, अग्नि बुझाने वालों में ही लिखा जायेगा।

चिड़िया की प्रेरणा से बंदर ने भी अग्नि बुझाने में मदद की। बंदर ने अपने सभी साथियों को प्रेरणा दी और देखते-ही-देखते जंगल में सभी जानवर मिलकर अग्नि बुझाने में लग गए और कुछ ही घण्टों में अग्नि बुझ गई।

बालको! जीवन में अच्छा कार्य ही करना। हो सकता है कि- प्रारंभ में आप अकेले हों, पर यदि आपका कार्य श्रेष्ठ है, तो अवश्य ही पूरा विश्व आपके साथ होगा। अच्छा कार्य करो एवं दूसरों को भी सद्-कार्य करने की प्रेरणा दो।

झुकेगा वही आकाश में दिखेगा

लघुता महान् गुण है। धर्म क्षेत्र हो, कर्म क्षेत्र हो, व्यापार क्षेत्र हो या हो शिक्षा **जिसके अन्दर लघुता है, नम्रता है वह निश्चित ही यश को प्राप्त करता है। विनम्रता से मनुष्य तो क्या देखता भी प्रभावित हो जाते हैं।**

जिसने लघु होना सीख लिया है, जिसकी नम्र वृत्ति है वह लोक में प्रसिद्धि को प्राप्त करता है। **आकाश में उड़ना है तो लघु बनो।** आप पतंग को देखना वह लघु होती है तो आकाश में उड़ती है, पर पाषाण भारी होता है सो पानी में डूब जाता है।

आपकी नम्रवृत्ति होगी तो आप अवश्य ही गुणग्राही होंगे। जहाँ से भी गुण मिलेंगे वहाँ से नम्र व्यक्ति ग्रहण कर लेगा और वही अहंकारी मान में भरकर सम्पूर्ण गुणों को नष्ट कर लेता है।

जो लघु बनेगा वही आगे बढ़ेगा। बालको! जीवन में

कभी भी अहंकार नहीं करना, क्योंकि– ''सबके दिन एकसे नहीं होते हैं'' **सब दिन एकसे नहीं होते हैं। जहाँ कभी महल थे वहाँ आज खण्डहर खड़े हैं। मित्र! दुनिया की पद्धति ऐसी है– जब जेब भरी होती है तो सब पूछते हैं और कहीं जेब खाली है तो अपने भी मुख मोड़ लेते हैं।**

विश्वमें, राष्ट्र में, समाज में नाम कमाना चाहते हो तो झुकना सीखो जो झुकना सीख लेता है वह भर जाता है। आपको एक कलश भी पानी से भरना है तो उसे कुए में झुकना पड़ेगा, नल की टोंटी के नीचे झुकना पड़ेगा। झुकोगे नहीं तो उठोगे कैसे? आपको शिक्षा भी प्राप्त करना है तो गुरु के सामने झुकना पड़ेगा। आपको नेता भी बनना है तो झुकना पड़ेगा। **लोक प्रिय भी बनना है तो विनम्रता का साथ न छोड़ें।**

लघुता, विनय महान् गुण है। विनय से विद्या की प्राप्ति होती है। विनय विकास के लिए परम सहायक है। विनय से विद्या, वैभव, यश की प्राप्ति होती है। विनय से शत्रु भी मित्र बन जाता है। विनयी पुरुष के विघ्न भी क्षण मात्र में विलीन हो जाते हैं।

आपका कोई शत्रु भी हो, विरोधी हो आप उसके पैर छू लेना वह क्षणभर में पानी–पानी हो जायेगा। **विरोधी भी विनय करने पर सहयोगी बन जाता है।**

हे बीज! तू तनिक धैर्य रख, मिट्टी में छिपा रह। अगर तू यह दिखाना चाहता है कि कोई मुझे देखता ही नहीं है कि– मैं कितना सुन्दर हूँ, तो तुझे चिड़िया चुग जायेगी। बालको! माता–पिता, गुरु के अनुसार जीवन जियोगे, उनके हस्त के नीचे जितना रहोगे, उतनी ही अधिक ऊँचाईयों को प्राप्त करोगे। **विद्या का कोई फल है तो वह विनय है।**

बालको! जब भी कोई कार्य करो सर्वप्रथम सोचो, समझो फिर निर्णय करो। जनक-जननी, गुरु एवं हितचिंतकों से सलाह लो। **आपके ज्येष्ठ आपको जो परामर्श दें उस पर विचार करो उसी अनुसार आचरण करो। ज्येष्ठों के पास अनुभव हैं, वह अपने अनुभव से हमें अनेक विपत्तियों से बचा लेते हैं।**

गुरु डाँटे, तब शिष्य की दृष्टि अनुदात्त हो। गुरु कोई सीख दें तो नम्रवृत्ति हो, लघुता हो, सीखने की ललक हो। ज्येष्ठों की सीख सज्जनों को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करती है। **जो ज्येष्ठों की अविनय करेगा, उसकी अवनति निश्चित है।** उसे कोई नहीं रोक सकता है।

पिता की पवित्र दृष्टि

एक चित्रकार के बेटे ने चित्र बनाया। पिता को दिखाया पिता महान् चित्रकार था। पिता ने अवलोकन किया अन्दर-ही-अन्दर आनंदित हुआ, पर नाक सिकोड़ ली और कहा कि- बेटा! अभी कमी है, अच्छा नहीं है और अच्छा बनाओ।

युवाओ! कोई भी सच्चा गुरु होगा तो अपने शिष्य को ऊपर उठते ही देखना चाहेगा और सच्चा पिता होगा वह कभी भी अपने बेटे का अहित नहीं चाहता है।

बेटे ने और अच्छा चित्र बनाया, पुनः दिखाया। पिता ने पुनः यही कहा कि- अभी कमी है। उसका वही चित्र जब बाहर गया, तो पुरस्कृत किया गया। उसके बाद भी बेटे ने चित्र बनाया, पिता को दिखाया, परन्तु पिता ने कहा अभी कमी है। अब तो बेटे को गुस्सा आ गया, तब उसने क्या किया? अपने हाथ का बनाया चित्र मित्र को देकर पिता के पास दिखाने भेज दिया, उसने पिताजी को दिखाया, तब पिताजी ने उसके ही सामने उस चित्र

को देखकर बहुत प्रशंसा की और कहा बेटा! तुमने बहुत अच्छा चित्र बनाया है। तब बेटा मुस्कराकर पिता के सामने आकर खड़ा हो गया, बोला, पिताजी! यह चित्र मैंने बनाया है।

बेटे की बात सुनकर पिता का चेहरा उतर गया और बोला, बेटा! अब तुम्हारी उन्नति की सीमा समाप्त हो गयी। तेरे मन में भाव था कि मेरी प्रशंसा हो जाये, बेटा! जहाँ प्रशंसा प्रारम्भ हुई, वहाँ संतुष्टि हो जायेगी। अब तुम आगे नहीं बढ़ पाओगे।

बेटा! जब-तक तेरे अन्दर प्रशंसा का भाव नहीं था और मेरे को तू दिखाता था और पूछता था तो मैं कहता था कि अभी कमी है, तो तू और-अच्छा बनाता था, परन्तु आज के बाद तू इससे अच्छा बना नहीं पायेगा।

जीवन में उत्तरोत्तर विकास, उन्नति करना है तो पिता के सामने पुत्र को और गुरु के सामने शिष्य को कभी प्रशंसा का भाव नहीं आना चाहिए।

अनर्थ की जड़ : श्री, स्त्री

धन, धरती और स्त्री इन तीनों की चाह में ही अनर्थ हुए हैं, अनर्थ हो रहे हैं और भविष्य में जितने भी अनर्थ होंगे धन, धरती या स्त्री की चाह में ही होंगे। धन और स्त्री की चाह में व्यक्ति अंधा हो रहा है।

विश्व में वस्तुएँ अल्प हैं, पर एक-एक व्यक्ति की आकांक्षायें इतनी अधिक हैं कि- विश्व की सामग्रियाँ कम हैं उस चाह, आकांक्षा के समक्ष। आकांक्षा ही दु:ख है।

युवाओ! ध्यान दो, विचार करो। यह यौवन कहाँ नष्ट कर रहे हो काम और कामना में, बाल और बालाओं में। भैया! रामायण क्यों हुई? स्त्री की चाह में। महाभारत क्यों हुआ? धन-

धरती की चाह। दुर्योधन ने क्या कहा था? मेरे प्राण चले जायेंगे, पर में पाण्डवों को सुई की नोंक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।

अनर्थ की जड़ कोई है तो 'श्री' 'स्त्री'। बालको! **धन कुछ तो है, पर सब कुछ नहीं है। धन, धरती जीने के साधन हैं, पर वह भी साथ जाने वाले नहीं हैं, यहीं छूट जायेंगे। जीवन में उत्कर्ष प्राप्त करना है तो ''धन को नहीं, धर्म को श्रेष्ठ मानना।**

वर्तमान में देश परस्पर में क्यों लड़ रहे हैं? मात्र धन और धरती। शासकों की धन-धरती की चाह ही युद्धों की ओर धकेल रही है।

साँप को कितना ही साथ में रखना, पर वह मौका देखकर डस ही लेगा। ऐसे ही धन उतना ही रखना जितना आवश्यक हो नहीं तो वही धन तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा। **लोग पहले धन कमाने के लिए दिन-रात एक करते हैं, अधिक-से-अधिक धन कमाने के लिए, फिर अस्वस्थ होकर प्राण बचाने को डॉक्टर को धन देते हैं।**

जीवन में क्या किया? बाल्यकाल से यौवन काल पढ़ाई की, क्योंकि धन कमाना था। यौवन अवस्था धन कमाने में लगा दी और जब सुख के दिन आये तो रोगों ने घेर लिया, सो वृद्धावस्था दवाई खाते-खाते निकल गई। पूरा जीवन जोड़ने-जोड़ने में व्यर्थ गुमा दिया।

मित्र! धन के अर्जन में दु:ख, धन की रक्षा में दु:ख। धन की चाह उतनी ही करो जिससे जीवनोपयोगी सामग्री जुटा सको, पर धन के कमाने में पूरा जीवन मत लगा देना। मनुष्य बने हो, नर देह प्राप्त की है तो इसका वेदन करो, जीवन को सुखमय जियो।

आत्म-संतोषी बनो

एक नगर में एक व्यक्ति निवास करता था। उसके पास बहुत धन था और सभी साधन भी, परन्तु उसको बहुत लालच था, अत: वह हमेशा यही प्रयास करता रहता था कि- अधिक-से-अधिक धन कैसे एकत्रित हो।

वह भगवान् का भी भक्त था। वह प्रतिदिन प्रभु-भक्ति करता। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर एक देवी प्रकट हुई और उसने कहा कि- मैं तुम्हारी प्रभु भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ, मैं तुम्हें वरदान देना चाहती हूँ। बोलो, तुम क्या चाहते हो?

वह व्यक्ति लोभ में आ गया, कहता है। वैसे तो मेरे पास सब कुछ है, पर आप कुछ देना चाहते हो तो इतनी शक्ति दो कि- जिसे मैं छू लूँ वह स्वर्ण बन जाये। देवी ने प्रसन्नता पूर्वक तथास्तु बोल दिया।

वह व्यक्ति घर पहुँचा। आज बहुत खुश था और मन-ही-मन अपनी सफलता पर अपने आपको धन्यवाद दे रहा था। जैसे ही भोजन करने बैठा, थाली को हाथ लगाया तो थाली स्वर्ण की बन गई, गिलास को हाथ लगाया तो पानी सहित गिलास स्वर्ण का बन गया। अब वह परेशान हो गया, पत्नी को स्पर्श किया तो वह भी स्वर्ग की बन गई। वह अपनी लोभ प्रवृत्ति के कारण संकट में फँस गया।

वह पुन: मंदिर पहुँचा वहाँ प्रभुभक्ति की, वहीं एक साधु महात्मा थे, उन्हें अपनी समस्या से अवगत कराया। महात्मा जी ने उस व्यक्ति को सदोपदेश दिया कि- आकांक्षा दु:ख का कारण है। लोभ पाप का पिता है। महात्मा के उपदेश से व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो गया और उसे समझ आ गया कि- **संतोषी जीवन ही सुखमय होता है।**

उस व्यक्ति ने देवी द्वारा प्रदत्त वरदान लौटा दिया और सुख-पूर्वक जीने लगा। बच्चो! जीवन में लोभ नहीं करना, भले ही साधु न बन सको तो कोई बात नहीं, परन्तु संतोषी अवश्य बनना। संतोषी सदा सुखी।

जिसके हृदय में संतोष है वह सुविधाओं के अभाव में भी शांत, सुखी रहता है और तृष्णा है तो सुविधाओं में भी कष्ट है।

वाणी वीणा बने, बाण नहीं

युवाओ! एक शब्द मंत्र है और एक शब्द गाली है। **हितकारी भाषण कुलीन विद्या है।** जो उच्च कुलीन होगा उसकी भाषा भी हितकर होगी। **मौन लेना एक कला है, पर मधुर वाणी बोलना, अल्प शब्दों में हितकर बोलना महाकला है।** एक वह शब्द है जिसे सुनकर शत्रु मित्र बन जाये और एक वह शब्द है जिसे सुनकर मित्र शत्रु बन जाये। वाणी की मधुरता से सम्पूर्ण विश्व को अपने पक्ष में किया जा सकता है और वाणी की कटुता से सम्पूर्ण विश्व को शत्रु बनाया जा सकता है।

महाभारत कैसे हुई? माता द्रोपदी ने दुर्योधन से इतना ही तो कहा था कि- 'अंधो के अंधे ही होते हैं'। रामायण कैसे हुई? रावण ने विभीषण से कहा था 'चुप रहो'। जिसकी वाणी में मधुरता नहीं, बोलने में विवेक नहीं वह हमेशा संकटों से घिरा रहेगा।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, अपहूँ शीतल होय॥

बालको! हमेशा अच्छा बोलो, भूलकर भी कटु वचन मत बोलो, क्योंकि शस्त्र का घाव तो शीघ्र भर जाता है पर कटु वचनों का घाव नहीं भरता है। **निरंकुश भाषण हमेशा कलह का ही कारण होता है। जीवन को सुखमय जीना चाहते हो तो सरलता, सहजता, मधुरता को स्थान दो।**

शिक्षा का सुफल

"शिक्षा का लक्ष्य मात्र धन कमाना न हो, अपितु शिक्षा का सुफल यह होना चाहिए कि- आत्मिक गुणों का विकास हो, नैतिकता का बोध हो, अधिकारों के प्रति सजगता और कर्त्तव्यों के प्रति समर्पण हो, जीवन सरल, सहज संस्कारित बने, दूसरों के प्रति अपनापन, आत्मीयता का व्यवहार हो, विनयशीलता नम्रता का सद्भाव एवं दूसरों के प्रति उपकार का भाव हमेशा बना रहे।"

प्रमाण पत्र योग्यता का प्रमाण नहीं है। व्यक्ति की योग्यता उसके व्यवहार, रहन-सहन, खान-पान एवं भाषा से स्वमेव प्रकट हो जाती है। शिक्षित व्यक्ति का यदि पशुवत् व्यवहार हो तो शिक्षा प्राप्त करने से क्या लाभ? **संस्कार एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही उपयोगी है।**

शिक्षा का उद्देश्य जीवन में संतोष शांति प्राप्त करने का होना चाहिए। धन कमा भी लिया, पर शांति का वेदन नहीं कर सका तो समझो कि- तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ गया।

शिक्षा वही श्रेष्ठ है जिससे अपना और सबका हित हो। परस्पर में सहयोग की भावना जाग्रत हो, धर्म, समाज, राष्ट्र का हित हो ऐसी ही शिक्षा का आदान-प्रदान होना चाहिए। **वही शिक्षा सुशिक्षा है जिससे जीवन सुखकारी बने।**

जिस शिक्षा से प्रतिस्पर्धा, परस्पर विद्वेष उत्पन्न हो वह शिक्षा नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य नैतिक मूल्यों का विकास, आर्थिक समृद्धि और आन्तरिक गुणों का शांतिमय जीवन जीने की ओर प्रेरित करे तो ठीक है अन्यथा मात्र शाब्दिक ज्ञान कोई कार्यकारी नहीं है।

हिताहित का बोध कराये वही सुशिक्षा है। जिस

शिक्षा से पाप की ओर प्रवृत्ति हो वह शिक्षा नहीं कुशिक्षा है। शिक्षा एक विद्या है जिसे प्राप्त करके संघर्षमय जीवन भी सुखमय जिया जा सकता है। शिक्षा सुखद जीवन जीने का एक उपाय है। शिक्षा का सुफल यही है कि- मानव में मानवीयता का विकास हो, मानवोचित प्रवृत्तियों का व्यवहार हो। परस्पर सहयोग की भावना वृद्धिमान हो। गुण-ग्रहण की भावना बने। अनुशासित जीवन बने। आचरण पवित्र हो, समीचीन विचार धारा हो।

स्वात्मावलोकन आवश्यक

बालको! जीवन के समग्र विकास के लिए स्वयं की आदतों पर नियंत्रण आवश्यक है। स्वयं का मूल्यांकन करते हुए जो जीयेगा वही विकास की राह और सफलता की ऊँचाईयों को छू पायेगा। **जैसे वाहन में ब्रेक न हो तो दुर्घटना निश्चित है वैसे ही जीवन में नियंत्रण न हो तो खतरा-ही-खतरा है।**

प्रतिक्षण, प्रतिपल अपना आत्मावलोकन करें, अपनी गतिविधियों का अवलोकन करें कि- आपकी जीवन की धारा किस ओर जा रही है?

आप स्वयं विचार करें, स्वयं निर्णय करें कि- आप क्या कर रहे हैं? जो आप कर रहे हैं, क्या वह आपके जीवन को उन्नति की ओर ले जायेगी?

क्या आप व्यर्थ के विवादों में रुचि लेते हैं? क्या आपको व्यसन करना अच्छा लगता है? क्या आप अनैतिकता को स्थान देते हैं? क्या आप विघ्न संतोषी हैं? क्या आप हिंसक प्रवृत्ति को अच्छा मानते हैं? क्या आप अपनी क्षमता से अनभिज्ञ रहते हैं? क्या आप चिड़चिड़ स्वाभाव के हैं? क्या आप व्यर्थ के लक्ष्यहीन

कार्यों में समय बर्बाद करते हो? क्या आप बिना विचार करे बोलते हो? क्या आप शीघ्र कोपी हो? क्या आप बिना विचार किए निर्णय लेते हो? क्या आप अहंकारी हो?

यदि आप उक्त आदतों के आदि हैं और अपने-आप पर नियंत्रण नहीं कर पाते हैं तो समझो आप कभी भी किसी भी क्षेत्र में प्रशंसनीय एवं सफल नहीं हो सकते हो।

जीवन : अमूल्य धरोहर

बालको! जीवन अमूल्य है। एक पल भी व्यर्थ में व्यतीत न हो। जीवन में सफलता को प्राप्त करना है तो अपने जीवन में अच्छी आदतों को स्थान दें।

यदि आपको अधिक बोलने की आदत है तो उस पर शीघ्रातिशीघ्र नियंत्रण करें, क्योंकि जो अधिक बोलता है उसका कोई भी सम्मान नहीं करता है। कम-से-कम बोलो, जितना आवश्यक हो उतना ही बोलो। अन्यथा मौन रहने का प्रयास करो, मौन से बहुत सारे विवाद तो स्वयं ही टल जाते हैं। व्यर्थ के विवादों में मत उलझो, विवादों से अपनी रक्षा करो। जहाँ विसम्वाद हो वहाँ से स्थान बदल दो। यदि आप व्यसनों के आदि हैं, तो यथाशीघ्र उनसे दूर होने का प्रयास करें, क्योंकि व्यसन धन के साथ-साथ देह को भी नष्ट कर देते हैं।

यदि आपको एकाएक तीव्र क्रोध आता है तो यह आपके लिए अत्यंत घातक है। इन घातक प्रवृत्तियों से अपनी रक्षा करें। अहिंसक वृत्तियों को स्थान दें। आपका व्यवहार सुसंस्कृत हो, खुशहाल एवं सफल बनने के प्रति सजगता हो।

विद्यार्थी जीवन बहुत मूल्यवान होता है। विद्यार्थी जीवन की मेहनत ही भविष्य में महान् बना पायेगी। आज के संस्कारों की अल्प पूँजी ही आपको महानता की ओर ले जायेगी।

शिक्षक दें दिशा-बोध

शिक्षकों से भी मेरा कहना है कि- बच्चे तो गीली मिट्टी के समान हैं, आप चाहो वैसा आकार दे सकते हो। जैसे कुम्भकार गीली मिट्टी से जैसा चाहे वैसा आकार दे सकता है वैसे ही शिक्षक, माता-पिता जैसा चाहें वैसा बालकों को बना सकते हैं। **आप जैसी राह दोगे, वैसा उनका भविष्य निर्माण होगा।**

प्रत्येक विद्यार्थी के अन्दर गुणों का विपुल भण्डार है। प्रत्येक विद्यार्थी के अन्दर एक महान् शक्ति है। शिक्षकों का कर्त्तव्य है कि- विद्यार्थी के अन्दर जो शक्ति है उसे उद्घाटित करें, उनके आत्मिक गुणों को उजागर करने हेतु अवसर दें, उन्हें प्रोत्साहित करें।

शिक्षकों को चाहिए कि- विद्यार्थियों को सम्यक् दिशा-बोध दें। आप जीवन का अनुभव विद्यार्थियों को दें, जीवन की गुत्थियों को सुलझाने की समझ दें। उन्हें अच्छे-बुरे से अवगत करायें, जिससे विद्यार्थी भटक न जायें। उनकी क्षमता के अनुसार कौशलात्मक अभिव्यक्ति के भरपूर अवसर प्रदान करें।

समय की समझदारी

समय बहुत मूल्यवान है। जिसने समय का प्रबन्धन समझ लिया वह कभी भी विफल नहीं हो सकता है।

एक बार जो समय निकल जाता है वह पुनः प्राप्त नहीं हो सकता है। **जो अपने जीवन के मूल्य को समझता है वह अपने बहुमूल्य क्षणों को व्यर्थ में व्यय नहीं करता है।** विवेकी पुरुष प्रत्येक क्षण को विधिपूर्वक उपयोग करता है।

जो समय रहते समय को समझ लेता है, वह समय को तो व्यर्थ करता ही नहीं, अपितु अवसर भी नहीं छोड़ता है। **जो**

समय की कीमत करता है, उसकी दुनिया कीमत करती है। व्यक्तिगत समझदारी, दूरदर्शिता का होना जरूरी है।

आप आत्म प्रेरक बनिए स्वयं के लिए। प्रतिदिन की समय-सूचि निर्धारित कीजिए कि किस कार्य में कितना समय व्यतीत करना है, पहले योजना बनाईये फिर उसके अनुसार कार्य प्रारंभ करिये।

कार्य करने के पूर्व योजना अवश्य बनाईये। प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने की समय-सीमा निर्धारित कीजिए। योजनाबद्ध पद्धति से कार्य करें।

सोने-जागने, नहाने, खाने-पीने, यहाँ तक कि मल विसर्जन का भी समय निर्धारित कीजिये। **यदि आप स्वयं में अनुशासित हैं तो आप निश्चित ही श्रेष्ठ एवं प्रशंसनीय हैं। समय का पाबंद व्यक्ति सभी का विश्वास पात्र होता है।**

श्रम से श्रेष्ठता

सभी के लिए श्रमशील होना आवश्यक है। किसी भी क्षेत्र में सफलता तभी संभव है जब आप अपने लक्ष्य के प्रति सजग एवं तदनुसार श्रमशील हैं।

जीवन में महान् बनने के लिए श्रमशील होना अत्यन्त आवश्यक है। श्रमशील ही श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकता है। श्रम से ही श्रेष्ठता, ज्येष्ठता प्राप्त होती है।

श्रमशील कभी भी दूसरों के भरोसे कार्य नहीं करता है और न ही वह किसी को दोष देता है। श्रमशील असफल होने पर भी हताश नहीं होता है, अपितु पुनः श्रम करके इच्छित वस्तु को प्राप्त कर ही लेता है।

कोई भी क्षेत्र हो रोजगार हो या अनुसंधान बिना श्रम के

कहीं भी लाभ नहीं है। **सच्ची सोच, समीचीन निष्ठा एवं योग्य श्रम ही इष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोगी बनता है।**

वैज्ञानिक हो या कृषिकार, व्यापारी हो या साहूकार, संत हो या सेवक, सैनिक हो या नेता उसे इच्छित लाभ के लिए श्रम करना ही पड़ेगा। शारीरिक श्रम से अधिक मानसिक श्रम आवश्यक है। आध्यात्मिक शांति हो या भौतिक साधन, बिना श्रम के क्या मिल सकता है?

जीवन में ऊँचाईयों को प्राप्त करना है तो श्रमशील बनना। जो कार्य आप स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए दूसरों का इंतजार न करें, स्वयं भी श्रम करें। **श्रम करने से शारीरिक तन्दुरुस्ती, मानसिक विकास एवं आत्मविश्वास जाग्रत होता है।**

शब्द सुमन

परस्पर में बातचीत करना भी एक कला है। आपको प्रभावी बनना है तो प्रभावी चर्चा करना सीखें। आपके **शब्द फूल तो बनें पर शूल बनकर न चुभें।** शब्दों को बहुत सँभलकर बोलना चाहिए, क्योंकि एक शब्द सुमन सा सुखद लगता है और एक शब्द काँटों की तरह चुभता है।

बालको! मुख से निकला शब्द और कमान से निकला वाण वापिस नहीं आता है, इसलिए बोलने से पहले सोचें। परस्पर बातचीत में मधुरता झलकना चाहिए। जिसे शब्द शक्ति का बोध हो जाता है, वह कालिया नाग को भी वश में कर लेता है।

निर्दय पुरुषों की मुखरूपी, वाणी में जो नागिन रहती है।
विषमय असत्य वाणी जिसकी, संसार को दुखमय करती है॥

निर्दय पुरुष जो अशिष्ट वचन बोलते हैं, उनके मुख विष उलगने वाले विषधर नाग के समान हैं, ऐसे लोगों के मर्मच्छेदी, वचन दुखमय ही हैं।

जो वाणी सन्देहमय, पाप-दोष से युक्त।
ईर्ष्या को उपजावनी, तासों रहिये मुक्त॥
ऐसी वाणी अन्य भी, अगर उचारें भ्रात।
पूछें पर नहीं बोलिए, सुनिए भी नहीं तात॥

संदेहमय वचन, कटुवचन, ईर्ष्यापूर्ण वचन कभी नहीं बोलना। जिससे विसंवाद बड़े ऐसी चर्चा भी नहीं करना और यदि कोई ऐसी चर्चा करे भी तो सुनना नहीं।

युवाओ! जोश में होश नहीं खोना। परिस्थिति के अनुसार ही वार्ता करना। उचित, सारगर्भित एवं संक्षेप में ही बातचीत करना, क्योंकि व्यर्थ की बातचीत से कुछ लाभ नहीं होता है। बातचीत करते समय आत्मविश्वास के साथ बोलें, पर अपनी आवाज पर संयम रखें, अधिक ऊँचे स्वर से न बोलें। सामने वाले की बात भी सुनें, बहस से बचें। **यदि बड़ों से चर्चा करना है, तो बातचीत के पूर्व उनका सर्वप्रथम विनयपूर्वक अभिवादन करें एवं नम्रता पूर्वक सम्मान जनक भाषा का प्रयोग करें।**

चिंता न करें

बालको! चिंता कपोल-कल्पना का वह रास्ता है जो काल्पनिक पागलपन के गड्ढे में गिरा देता है और फिर वह यथार्थ तक पहुँचने ही नहीं देता है। चिंता बहता हुआ दरिया है जो हमारी सम्पूर्ण ऊर्जा एवं शक्ति को अतिशीघ्र बहाकर हमसे दूर ले जाता है। चिंता एक अंतहीन प्रक्रिया है।

चिन्तया नश्यते ज्ञानं, चिन्तया नश्यते बलम्।
चिन्तया नश्यते बुद्धिर्व्याधिर्भवति चिन्तया॥

चिन्ता करने से ज्ञान नष्ट होता है, चिन्ता करने से बल नष्ट होता है, चिन्ता करने से बुद्धि नष्ट होती है, चिन्ता करने से बुद्धि नष्ट होती है तथा चिन्ता करने से व्याधि अर्थात् बीमारियाँ होती हैं।

मित्रो! कृषक भूमि में बीज डाल देता है, परन्तु वह उसे उघाड़कर देखता नहीं है, ऐसे-ही **साहसी लोग साहस पूर्वक कार्य करना प्रारम्भ करते हैं, वह चिंता में डूबकर अपनी शक्ति और समय व्यर्थ में व्यतीत नहीं करते हैं।**

व्यक्ति को विपत्ति के काल में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि जो धैर्य छोड़कर अधीर होता है, वह शीघ्र ही कष्ट को प्राप्त करता है, परन्तु **जो धैर्य धारण कर विपत्ति से जूझता है उसकी सम्पूर्ण विपत्ति क्षणमात्र में दूर चली जाती है।**

चिन्ता चिता समान, बिन्दु मात्र अन्तर लखो।
चिता दहत निःप्राण, चिन्ता दहत सजीव को॥

चिता और चिन्ता में एक बिन्दु की ही विशेषता है, चिता तो निर्जीव शरीर को जलाती है, पर चिंता जीवित को ही जला देती है।

भीषण अग्नि महावन में हरे-भरे वृक्षों के समूह को विनष्ट कर देती है, राख के ढेर में परिवर्तित कर देती है। वैसे-ही चिन्ता व्यक्ति के ओज, तेज, बल, उत्साह, उमंग को नष्ट कर देती है।

विद्यार्थियो! अपने जीवन में इतना ध्यान रखना कि- **जिस प्रकार अग्नि में शीतलता सम्भव नहीं है, उसी प्रकार चिंता से कार्य की सिद्धि सम्भव नहीं है। असफलताओं और बीमारियों की कोई मूल जड़ है तो वह नकारात्मक सोच और चिंता है। जब भी तनाव होगा, तो सर्व प्रथम नकारात्मक सोच से ही होगा। नकारात्मक विचार के आते ही चिंता प्रारंभ हो जाती है।**

अग्नि की एक चिंगारी जिस प्रकार ईंधन को जलाकर भष्म कर देती है उसी प्रकार चिंता की चिंगारी चेहरे की चमक को क्षणमात्र में नष्ट कर देती है।

अच्छी आदतें

1) सुनें अधिक, बोलें कम-से-कम।
2) बड़ों की आज्ञा का पालन करें।
3) सामग्रियों को उचित स्थान पर रखें।
4) बिना पूछे सलाह न दें।
5) सहायता मिलने पर धन्यवाद अवश्य दें।
6) त्रुटि होने पर क्षमा माँगें।
7) किसी की भी हँसी न उड़ायें।
8) छोटे हों या बड़े अभिवादन करें।
9) लोकाचार का ध्यान रखें।
10) अपने व्यवहार से किसी को कष्ट न दें।
11) उपकारी के उपकार को न भूलें।
12) सहयोगियों का यथायोग्य सम्मान रखें।
13) अपने कर्त्तव्यों का सजगता के साथ पालन करें।
14) अपने घर में फूटे काँच, फटे वस्त्र, पुराने जूते-चप्पलों का संग्रह न करें, आवश्यकता हो उतनी ही सामग्री रखें।
15) किसी के साथ धोकाधड़ी न करें, हमेशा अच्छा व्यवहार करें।
16) बिना पूछे किसी की वस्तु को न लें।
17) दूसरों की वस्तुओं को सुरक्षित एवं समय पर ससम्मान लौटायें।

कहाँ जायें?

1) जहाँ जीवन जीने के प्रति प्रेरणा मिले।
2) जहाँ मानवीयता का उत्कर्ष हो।
3) जहाँ उत्साह शक्ति का विकास हो।
4) जहाँ सत्य, संयम की प्रेरणा मिले।
5) जहाँ आत्मिक-मानसिक शांति मिले।
6) जहाँ अपनी योग्यता का उत्कर्ष हो।

7) जहाँ सच्ची और अच्छी राह मिले।
8) जहाँ अहिंसा, सरलता, सज्जनता, मैत्री की शिक्षा मिले।
9) जहाँ सामाजिक, बौद्धिक उत्कर्ष हो।
10) जहाँ प्रतिपल/प्रतिक्षण जीवन विकास की प्रेरणा प्राप्त हो।

कहाँ न जायें?

1) जहाँ जीवन जीने के प्रति निराशा मिले।
2) जहाँ मानवीयता का ह्रास हो।
3) जहाँ उत्साह शक्ति का विनाश हो।
4) जहाँ असत्य/असंयम का रास्ता हो।
5) जहाँ शारीरिक, मानसिक अशांति हो।
6) जहाँ योग्यता का ह्रास हो।
7) जहाँ बुरी एवं असत्य राह हो।
8) जहाँ हिंसा, कुटिलता, शत्रुता का पाठ पढ़ाया जाये।
9) जहाँ बुद्धि कुंठित हो और सामाजिक अपकर्ष हो।
10) जहाँ क्षण-क्षण कुमार्ग मिले।

स्वयं को बचायें

1) पाप प्रकृति से।
2) आत्मिक अशांति से।
3) झगड़े से, (लड़ाई से)।
4) अशुभ भाषण से।
5) क्रोध-कलह से।
6) रोग से।
7) बुराईयों से।
8) असभ्य व्यवहार से।
9) अनैतिकता से।
10) ईर्ष्या से।

स्वयं को लगायें

1) पुण्य कार्यों में।
2) आत्मिक विकास में।
3) सुलह, मैत्री में।
4) अच्छाईयाँ प्राप्त करने में।
5) सभ्य, सत्य-मार्ग पर।
6) नैतिक, धार्मिक क्षेत्र में।
7) ज्ञान-अध्यात्म में।
8) अपनी सुप्त शक्तियों को उद्घाटित करने में।

क्या बनें?

1) व्यवहार कुशल।
2) नैतिक, सदाचारी, साहसी।
3) सच्चे सहायक, परोपकारी।
4) अहिंसक, दयालु, करुणावान, मिष्ठभावी।
5) सेवाभावी, संतोषी।
6) आदर्श-प्रेरक, सच्चे सलाहकार।
7) गुणग्राही, प्रशंसक।
8) अच्छे पारखी, अनुभवी।
9) शिक्षित, संस्कारित

कभी न छोड़ें

1) सु.अवसर।
2) सच्चा मार्ग।
3) सच्ची शिक्षा।
4) माता-पिता, गुरु, उपकारी।
5) नैतिकता, सरलता।
6) सतत् अभ्यास।

7) सफलता के सूत्र।
8) अच्छाईयाँ।
9) क्षमा, दया, करुणा।
10) मैत्री भाव।

चिन्तामुक्ति के उपाय

v चिंता होने पर शीघ्र स्थान बदल दें।
v मुख पर शीतल जल के छींटे मारें।
v अपने कान के निचले हिस्से को अंगुष्ठ एवं अंगुली से दबाकर नीचे की ओर खींचे।
v नेत्रों को पाँचसात बार शक्तिपूर्वक मींचे खोलें।
v उच्च एवं दीर्घस्वर से 'ओम्' का उच्चारण करें।
v हवा-युक्त खुले स्थान पर विश्राम करें।
v स्वयं का हँसमुख, प्रसन्न-मुद्रा वाला फोटू देखें।
v कुछ बातें भाग्य-भरोसे छोड़ दें।
v सोचें कि भाग्य से अधिक और समय से पहले किसी को कुछ नहीं मिलता है।
v तीर्थ वंदना करें।
v अच्छा साहित्य पढ़ें।
v विचार करें कि क्या चिंता करने से कार्य हो जायेगा?
v सम्यक् चिंतन करें।
v विपत्ति आने पर घबड़ायें नहीं, संघर्ष करें।
v आशावादी बनें, आप अवश्य ही चिन्ता मुक्त होंगे।

अवनति के कारण

v नकारात्मक विचार एवं अनुत्साह प्रवृत्ति।
v ईर्ष्यालु, श्वानवृत्ति।
v आशंकित होना।

- विपरीत संगति।
- शीघ्र ही हतोत्साहित होना।
- अनेकों से शत्रुता, अपनेपन की शून्यता, अपनों के प्रति द्रोह।
- योजना का अभाव।
- अनुशासन का अभाव।
- अनुभव की हीनता।
- उमंग, उत्साह की कमी।
- उचित साधन, अवसर पर चूक।
- हीन भावना, चिंता, क्रोध एवं अविवेकपूर्ण निर्णय।
- आत्मविश्वास की हीनता।
- पुण्य की क्षीणता में अत्यधिक अपेक्षायें।
- पुरुषार्थ एवं भाग्य की हीनता।
- रीति-नीति की अनभिज्ञता।
- समय-सूचकता का अभाव।
- स्वयं के प्रति अविश्वास, अनास्था।
- धैर्य की क्षीणता, सहसा कार्य प्रारम्भ करना।
- अपने-आपको महत्त्वहीन समझना।
- दूसरों को दोष देने की आदत।

उत्कर्ष के सूत्र

- आशावादी एवं सहनशील बनें।
- व्यवहारवादी बनें।
- समीचीन लक्ष्य-निर्धारण करें।
- मिलनसार बनें।
- अपनी सफलता पर प्रसन्न हों।
- स्वयं की प्रशंसा पर स्वयं को प्रोत्साहित करें।
- स्वयं को आदेश देना सीखो।
- स्वयं की सफलता पर स्वयं ही, स्वयं को धन्यवाद बोलें।
- सहयोगियों की समय-समय पर प्रशंसा करें।

v उपकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें।
v प्रशंसकों को पूँजी की तरह आदर दें।
v जीवन में प्राप्त उपलब्धियों का अवलोकन करें।
v किसी की निंदा न करें।
v स्वस्थ आत्म-सम्मान करें।
v मैत्री भाव रखें।
v स्वयं का आह्वानन करें।
v मधुर वाणी एवं विनयशीलता का ध्यान रखें।
v यह स्मरण में रखें कि आपका कार्य आपके सशक्त विचारों का दर्पण है।
v आपके कार्य आपकी माँग के विरोध में न हों, बल्कि उसके अनुरूप हों।
v सही योजना (प्लानिंग) करें।
v दृढ़ संकल्पी बनें एवं कार्य करने के पूर्व लक्ष्य का निर्धारण करें।
v सही सलाह, समीचीन मार्गदर्शन एवं अनुभवियों के अनुभव लेते रहें।
v अनुशासनप्रिय बनें।
v स्वयं की सकारात्मक सोच का सम्मान करें।
v सही समय पर सही अवसर को समझना सीखें।
v धैर्यवान्, आस्थावान् बनें।
v आत्मविश्वास, उत्साह, साहस, उमंग बनाए रखें।
v प्रबल-पुरुषार्थ करें।
v अशुभ विचारों की उपेक्षा करें और अच्छे विचारों का आदर करें।
v सहयोगियों को कृतज्ञता ज्ञापित करें।

कैसे रहें प्रसन्न

v हमेशा अपने को अच्छा व्यक्तित्व समझें।
v उन बातों का स्मरण करें जो तुम्हें प्रसन्नता देती हों।

- उस व्यक्ति का स्मरण करें जिससे तुम्हें प्रसन्नता मिलती हो।
- हमेशा चिंतामुक्त, निश्चिंत रहें।
- एक सूत्र पर जियें– 'जो होगा सो देख लेंगे।'
- उन स्थानों की परख रखें, जिनसे आपको प्रसन्नता होती हो।
- अपने चारों ओर सकारात्मक–ऊर्जावान वस्तुओं को रखें। जैसे–दर्पण, कपूर, लेखनी, शास्त्र, माला, पूज्यपुरुषों के चित्रादि।

- समीचीन सोच रखें, क्योंकि सही सोच ही प्रसन्नता देती है।
- सुखद यादें, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य का स्मरण करें।
- परोपकार की भावना रखें।
- जो है, सो ठीक है।
- विचार करें कि – कुछ नहीं, संसार ऐसा ही है।
- संतोषी बनें।
- स्वयं की प्रशंसा करें, स्वयं से।
- अपनी राह स्वयं चलें, अपना कार्य स्वयं करें।
- आशावादी, सकारात्मक सोच रखें।
- हमेशा सकारात्मक एवं अच्छा सोचें।
- सफलताओं का स्मरण करें।
- यह हमेशा ध्यान रखें कि सब कोई काम में आते हैं।
- कभी–कभी 'न' कहना भी सीखें।
- आप सोचें कि दुनियाँ बहुत सुन्दर है, मैं उसका एक हिस्सा हूँ।

अहिंसा

- विश्व बन्धुत्व का एक ही नारा, अहिंसा धर्म है हमारा।
- अहिंसा ही धर्म है, अहिंसा–धर्म को धारण किए बिना न सुख है, न ही शांति संभव है।
- रात्रि में भोजन न तो धर्म की दृष्टि से ठीक है और न ही स्वास्थ्य की दृष्टि से।

- हिंसक उपकरणों का उपयोग करना भी हिंसा ही है और हिंसा ही दुःख का कारण है।
- शत्रु को भी शत्रु-दृष्टि से मत देखो, उसके अहित में चिन्तन मत करो यही अहिंसा है।
- सर्व सुखमयी धर्मों का जनक अहिंसा-धर्म है।
- मारने वाला श्रेष्ठ नहीं, बचाने वाला श्रेष्ठ होता है।
- सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय होते हैं, इसलिए किसी के प्राणों का हरण मत करो।
- यदि आप सुखी जीवन जीना पसंद करते हो, तो दूसरे जीवों को कष्ट में मत डालो।
- करोड़ों रत्न का दान श्रेष्ठ नहीं है, पर एक जीव के प्राण की रक्षा करना श्रेष्ठ है।
- धर्म वही है, जो सबके लिए कल्याणकारी हो और जो किसी भी जीवको कष्ट प्रदान नहीं करता हो।
- विश्व शांति का उपाय, एकमात्र अहिंसा धर्म है।
- अहिंसा सदुपदेश देने के लिए सरस्वती है।
- धर्म के समस्त अंगों में अहिंसा एक प्रधान अंग है।

सत्य

- सत्य जीवन का सार है, सत्य के बिना जीवन मृत-तुल्य है।
- जिसका अंतःकरण सत्य से शून्य है, वह मानवधर्म से रहित है।
- सत्यवादी का यश युगों-युगों तक गूँजता है।
- जो व्यक्ति सत्य, अहिंसा में सदा तल्लीन रहता है, उसे मानव क्या देवता भी नमस्कार करते हैं।
- सत्य के प्रभाव से अग्नि भी शीतल नीर और शूली भी सिंहासन हो जाती है।
- संकटों के समय ही सत्य की परीक्षा होती है।

v सत्य वचनोंसे वाणी पवित्र होती है।

v जो व्यक्ति प्रतिपल सत्य वचन बोलता है, उसको वचन-सिद्धि हो जाती है।

v सत्य ही तप है, सत्य ही संयम है, सर्वगुण सम्पन्न है 'सत्य'।

v निष्कलंक जीवन जीना है, तो हमेशा सत्य भाषण करो।

v सत्य का सुफल सुखमय ही होता है।

v सत्यव्रती को ही विद्यायें सिद्ध हो सकती हैं।

अचौर्य

v किसी की रखी, पड़ी, भूली हुई वस्तु को स्वामी की अनुमति के बिना ग्रहण नहीं करना, अस्तेय अथवा अचौर्य व्रत है।

v बिना दिए ग्रहण नहीं करना, अस्तेय अथवा अचौर्य व्रत है।

v किसी व्यक्ति की धरोहर का हरण नहीं करना अस्तेय है।

v चोर का कोई व्यक्ति विश्वास नहीं करता, इसलिए अचौर्य व्रत धारण करो।

❖ चोर इस लोकमें अपयश और परभव में दुर्गति को प्राप्त होता है।

v चोर का संसर्ग-मात्र महाकष्टदायक होता है।

v चोर की प्रतिष्ठा क्षणभर में नष्ट हो जाती है।

v चोर का आचरण उत्तम नहीं होता है।

v चोरी करने वाले पर कोई विश्वास नहीं करता है, उसका सभी जगह तिरस्कार होता है।

v जो बचपन में छोटी-छोटी चोरी करता है वही बड़ा होकर डाकू बनता है। चोरी करना पाप है एवं दुःख का कारण है।

v अस्तेय अर्थात् चोरी नहीं करना, अचौर्य महान् व्रत है और इहलोक एवं परलोक में यश देने वाला है।

ब्रह्मचर्य

v व्रतों का सम्राट् कोई है, तो वह ब्रह्मचर्य है।

v कामसेवन से कुलीनता, लज्जा आदि गुण समाप्त हो जाते हैं।

v जो नर ब्रह्मचर्य से रहित होता है, वह सर्वत्र तिरस्कृत होता है।

v वीर पुरुषों का आभूषण एवं उत्तम गुणों का दाता है ब्रह्मचर्य व्रत।

v सभी उत्तम गुणों में ब्रह्मचर्य व्रत श्रेष्ठ है। ब्रह्मचर्य भंग करने से सभी गुण पलायण कर जाते हैं।

v कामी के अन्दर विद्वत्ता, मनुष्यता, कुलीनता, सत्य, अहिंसा यहाँ तक की नैतिकता भी नहीं ठहरती है।

v कुशील सेवी शीघ्रातिशीघ्र बुढ़ापे को आमंत्रण देता है।

v अब्रह्म से बड़ा कोई दुराचार नहीं और शील से बड़ा कोई सदाचार नहीं है।

v ज्ञान, विवेक का विकास ब्रह्मचर्य के पालने से ही संभव है।

v एक दिन शील भंग करने वाला करोड़ों भवों में वेदना को प्राप्त होता है।

v सूर्य तो दिन में ही सुखाता है, परन्तु काम का रोगी रात-दिन सूखता है।

v आत्मस्वरूप में लीन होना ही सत्यार्थ ब्रह्मचर्य धर्म है।

अपरिग्रह

v कदाचित् सूर्य अपना प्रकाश छोड़ दे, सुमेरु पर्वत अपनी अचलता भी छोड़ दे, परन्तु परिग्रह सहित साधक निःशंक, निस्पृह, जितेन्द्रिय नहीं हो सकता है।

v परिग्रह-लोलुपी पुरुष अंधे के समान होता है।

v राग दृष्टि-संग्रह-वृत्ति ही परिग्रह-दृष्टि है।

v परिग्रह दुःख एवं अशांति का हेतु है।

v परिग्रह सम्पूर्ण पापों की मूल जड़ है, परिग्रह के आते ही सभी पाप प्रारंभ हो जाते हैं।

v इतिहास साक्षी है कि- भूतकाल में जितने युद्ध हुए हैं, वर्तमान में हो रहे हैं और भविष्य में जो भी युद्ध होंगे उसका मात्र एक ही कारण है, वह परिग्रह की लालसा।

v परिग्रह की चाह व्यक्ति को पतित कर देती है।

v द्रव्य के अभाव में ममत्व होता भी है और नहीं भी होता, परन्तु जहाँ परद्रव्य का सद्भाव होगा वहाँ नियम से परिग्रह रूप परिणाम होंगे।

v परिग्रह सत्-पुरुषों के वैराग्य एवं विवेकरूपी वृक्ष की मंजरियों का उन्मूलन कर देता है।

श्रेष्ठ सीख

v स्वयं जियो, दूसरों को जीने दो।
v अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी ध्यान रखो।
v जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
v सरलता छोड़ना नहीं कुटिलता करना नहीं।
v तुम शेर हो, तो सामने वाला सवा-शेर है।
v जैसा दिखते हो, दिखना चाहते हो, वैसे बनो।
v जैसा अपने लिए चाहते हो, वैसा दूसरों के प्रति भी करो।
v जगत् को जागृत करो, जलो मत।
v स्वतंत्रता को प्राप्त करो, स्वच्छन्दता को छोड़ो।
v अच्छा बोलो, अच्छा पढ़ो, अच्छा सोचो।
v उपकारी का अपकार मत करो।
v कुछ अच्छा करने का प्रयास हमेशा करो।
v परिवार, समाज, राज्य और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहो।
v सुनो, समझो, फिर कुछ करो।
v पहले सोचो, यदि आवश्यक हो तो कुछ बोलो।
v आवश्यकतानुसार बोलो, पर व्यर्थ बको मत।

v अल्प जीमो, अल्प बोलो। बहुत मत खाओ, अधिक मत बोलो।

v स्वयं की आस्था संसार का सफलतम स्वामी बना देती है।

v आपका आदर्श आचरण ही लोगों को आपकी ओर आकर्षित करता है।

v आत्मानुशासक, अनुशासनप्रिय ही दूसरों पर शासन कर सकता है।

v दीपक की तरह बनो। प्रकाशित रहो, प्रकाशित करो।

v हमेशा धन्यवाद दें, सहयोगियों को।

v सही सोच ही सभी समस्याओं का समाधान है।

v समय देना सीखो तो समय पर सभी समस्यायें सुलझ जायेंगी।

v व्यसन विकास में बाधक हैं।

v विपरीत विचार विषैला-विष है, जो विकास में बाधक है।

v जीना तुम्हारा अधिकार है और दूसरों को जीने देना तुम्हारा कर्त्तव्य है।

v गुणग्रहण दृष्टि से ही समृद्धि, सुख-शान्ति संभव है।

v सम्यक् विकास के लिए आत्मावलोकन और अनुशासन आवश्यक है।

v मौन रहना कला है, परन्तु समय पर आवश्यकतानुसार अल्प बोलना महाकला है।

v सगा ही शत्रु बनता है। जब सगा तुम्हारी सफलता को सहन नहीं कर पाता है तो वही सगा शत्रु बनकर अपकार करने खड़ा हो जाता है।

v जिसकी सोच बड़ी होती है, वही बड़ा होता है।

जीवन जीने के गुर

v जीवन एक संघर्ष है, उस संघर्ष को जीतना चाहते हो तो हताश मत होना, क्योंकि जब भी हार होगी वह अगली विजय के लिए प्रेरित करेगी।

- जीवन के रहस्य को जानना है, तो कम खाओ, कम बोलो, मौन अधिक रहो, धैर्य धारण करो और संयमित जीवन के साथ–साथ विद्यान्वेषी बनो ।
- जीवन में नैतिकता, धार्मिकता होगी तो तुम मनुष्य की तरह जीवन जी पाओगे, अन्यथा मनुष्य होकर भी पशुता का जीवन है ।
- जीवन शांतिपूर्ण जीना है, तो किसी की चुगली, निंदा मत करो और हर– हमेशा गुणीजनों की संगति करो ।
- आप यदि सभी के प्रशंसनीय बनना चाहते हो तो कभी क्रोध मत करो, सभी से मित्रवत् व्यवहार करो एवं बन सके उतना दूसरों का सहयोग करो ।
- जीवन को आदर्श बनाना है तो पर के सुधार में नहीं, स्वयं के सुधार में समय लगाओ ।
- जीवन को आनंदमय जीना है तो धन के साथ–साथ धर्म को भी महत्त्व दो, आध्यात्म पक्ष को मजबूत करो ।
- व्यर्थ की बातों में एवं व्यर्थ के कार्यों में अपने अमूल्य समय एवं बुद्धि को नष्ट मत करो ।
- परोपकार भावना एवं सद्कार्यों के लिए हर– हमेशा तत्पर रहो ।
- जीवन ऐसे जियो कि – आपके कारण किसी को कष्ट न हो ।
- श्रेष्ठ साहित्य अध्ययन हमेशा करो ।
- प्रासुक भोजन करो एवं शांतिपूर्ण धार्मिकता से ओतप्रोत जीवन जियो ।
- अपने से बड़ों का हमेशा आदर करो, बराबरी एवं छोटों के प्रति वात्सल्य / स्नेहपूर्ण व्यवहार करो ।
- आत्मचिन्तन, ध्यान–योग से भी अपने को जोड़ो ।

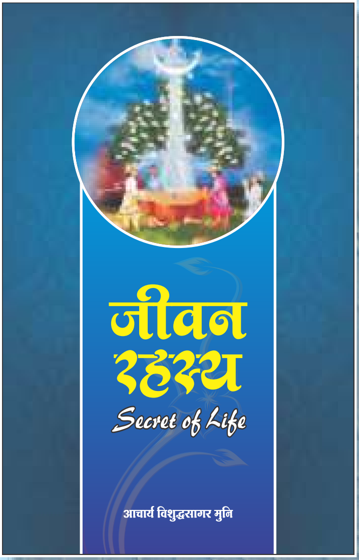
जीवन रहस्य
Secret of Life
आचार्य विशुद्धसागर मुनि

ग्रंथ प्रकाशन पुण्यार्जक

जयचंदलाल, सुमनदेवी, नवीन, मिनाक्षी
आदेश, सोनम, महक, आरव, चार्वी, विहान
समस्त सेठी परिवार, हैदराबाद